ओ३म्

पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित योग एवं आयुर्वेद विषयक साहित्य

दिव्य प्रकाशन परिचय

(पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित योग, आयुर्वेद, स्वदेशी एवं भारतीय संस्कृति विषयक साहित्य)

श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी एवं आचार्य श्रीबालकृष्ण जी के नेतृत्व में पतंजलि योगपीठ भारतीय संस्कृति, पुरातन गौरव, योग, आयुर्वेद, स्वदेशी एवं प्रखर राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार में जुटा है। इस अभियान के अन्तर्गत अन्य प्रकल्पों के साथ साहित्य-प्रकाशन भी एक विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण प्रकल्प है। प्रकाशन के इस क्रम में आयुर्वेद के बहुत से प्राचीन हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथों का प्रकाशन भी किया जा रहा है। प्रस्तुत सूची पत्र में दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा प्रकाशित ग्रंथों का विवरण दिया जा रहा है।

पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित आयुर्वेदीय ग्रन्थ :-

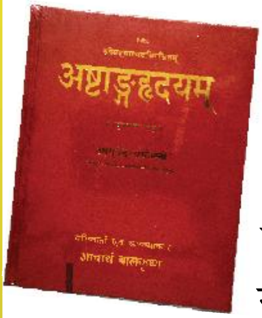

अष्टाङ्गहृदयम्

अष्टाङ्गहृदयम् (सूत्रस्थान, हिन्दी व्याख्या सहित)

यह वाग्भट द्वारा रचित पठन-पाठन में सुप्रचलित प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ है। आयुर्वेद के छात्रों को सुगमता से विषय-बोध कराने हेतु इसके सूत्रस्थान को शब्दार्थ एवं सरल हिन्दी व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है। अत: यह संस्करण आयुर्वेदाचार्य छात्रों के लिये विशेष उपयोगी है। (प्रकाशन - अगस्त 2014 ई.) मूल्य- रु. 800 (हिन्दी)

अष्टवर्ग-रहस्य (अष्टवर्ग-विषयक शोधपूर्ण ग्रन्थ)

अष्टवर्ग-रहस्य

अष्टवर्ग आयुर्वेद में वर्णित आठ जीवनीय एवं वय:स्थापन औषधियों (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि व वृद्धि) का एक समूह है। यह च्यवनप्राश का भी एक विशेष घटक है। अष्टवर्ग की औषधियों की पहचान एवं वास्तविक स्वरूप के विषय में बहुत लम्बे समय से भ्रान्ति बनी हुई थी। इस पुस्तक में प्रामाणिक रूप से अष्टवर्ग की पहचान और वास्तविक स्वरूप का चित्र सहित विशदतया पूर्वक विवेचन किया गया है। इसमें अब तक हुए एतद्विषयक प्राचीन व आधुनिक अनुसंधान के आलोक में खोजपूर्ण तथ्यों के आधार पर निर्भ्रान्त रूप से अष्टवर्ग का स्वरूप प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अतीव उपादेय व ज्ञानवर्धक है। प्रकाशन वर्ष- 2012 ई. मूल्य- रु. 150 (हिन्दी)

Secrets of Astavarga Plants (For Vitality and Anti-aging)

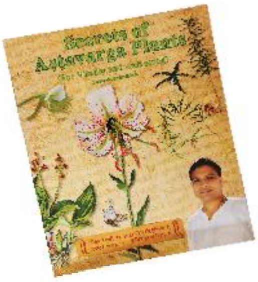

Secrets of Astavarga Plants

Astavarga is a name of a group of eight vitality promoting and anti-aging medicinal plants (Jivaka, Rishabhaka, Meda, Mahameda, Kakoli, Ksirkakoli, Riddhi and Vriddhi) mentioned in Ayurveda. It is also an important ingredient of "Cyavanaprasa". There were several controversies, confusions and uncertaintes about the identification of Astavarga plants from a longer time. For the first time, in this book the correct identification with original photographs of entire plant have been illustrated for easy and evident identification. The identification and description of Astavarga plants presented in this book is based on ancient Ayurvedic literature and modern research carried on plants till date and also written after keeping in mind the especially discovered facts while exploring the plants in their natural habitats. This book is extreme viable and enlightening.

आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य

(आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिकता एवं मूल सिद्धान्तों का वर्णन करने वाला ग्रन्थ)

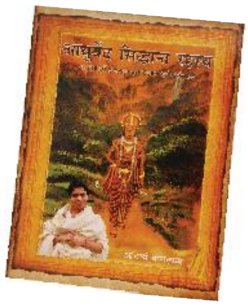

आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य

यह आयुर्वेदीय परम्परा का अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में प्रकाशित पहला विश्वस्तरीय ग्रन्थ है। यह विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों एवं उसकी वैज्ञानिकता को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी तथ्यों को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने वाला यह अद्वितीय ग्रन्थ है। इसमें ऋषिकृत संहिताओं एवं आधुनिक शोध के आलोक में रोगमुक्ति एवं स्वास्थ्यप्राप्ति का सरल मार्ग बताया गया है। विषय को सरलता से समझाने के लिए प्राचीन शैली के अनुसार मौलिक चिन्तन के आधार पर हस्तनिर्मित आकर्षक 29 चित्र भी इस पुस्तक में प्रस्तुत किए गए हैं। विभिन्न व्याधियों के लिए स्वानुभूत आयुर्वेदिक उपायों (योगों) को प्रस्तुत करने के साथ-साथ ही इसमें आहार-विहार, दिनचर्या, ऋतुचर्या एवं योग-साधना की विधि भी बताई गई है। वास्तव में इस पुस्तक के बताए गए उपायों व समाधानों को अपनाने से विश्व पटल पर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में एक आकर्षक

एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सकता है। पुस्तक में वर्णित उपायों से घर में शून्य प्रतिशत (0%) हैल्थ बजट का एक आदर्श कीर्तिमान बनाया जा सकता है। प्रकाशन वर्ष, तृतीय संस्करण- 2015 ई . मूल्य- रु. 250 (हिन्दी)

आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य के परिष्कृत संस्करण (सन् 2013 ई.) की अद्‌भुत सफलता और मांग के बाद हिन्दी सहित भारत की प्रमुख सभी भाषाओं में (तमिल, तेलुगू, असमिया, बंगाली, उडिया, कन्नड, मलयालम, पंजाबी, नेपाली, उर्दू, गुजराती, मराठी) आदि में प्रकाशित की जा रही है। आयुर्वेद परम्परा एवं सिद्धान्त का ज्ञान कराने वाली यह अद्‌भुत पुस्तक जब विश्व के अनेक देशों में पहुँची तो वहाँ के प्रसिद्ध प्रकाशकों ने इस पुस्तक के प्रकाशन की मांग की। इस श्रृंखला में यह पुस्तक अब विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में विश्व के विख्यात प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की जा रही है।

Sr. No.	Language	Country
1-	English (US)	US
2-	Czech	Czech Republic
3-	German	German
4-	Italian	Italy
5-	Spanish	Spain
6-	French	France
7-	Latvian	Latvia
8-	Sinhala	Sri Lanka
9-	Lithuanian	Lithuania
10-	Portuquese	Portuqal
11-	Russian	Russia
12-	Estonian	Estonia
13-	Norwegian	Norway
14-	Armenian	Amrenia
15-	Irish	Ireland
16-	Georgian	Georqia
17-	Croatian	Republic of Croatia
18-	Japanese	Japan
19-	Slovenian	Slovenia
20-	Slovenian	Slovenia
21-	Chinese	China
22-	Serbain	Serbia

A Practical Approach to The Science of Ayurveda

The Science of Ayurveda

This is the first authentic world class treatise of Ayurvedic tradition published in several national and foreign languages. The present book highlights the basic principles and scientific approach of the world's oldest medicine system i.e. Ayurveda in a simple and easy language. This is a unique treatise presenting the health related facts with full authenticity. This book explains the simple ways to achieve complete health and disease-free life on the basis of modern research and ancient scripture written by ages. For easy understanding the principles of Ayurveda in ancient style, about 29 attractive handmade images are presented in this book on the basis of fundamental ideology. The book also presents the author's self-experienced Ayurvedic remedies for different diseases along with appropriate diet and lifestyle regime with respect to different seasons and methods of Yogasadhana. Adoption of all the methods and remedies in the daily regime results in transformation and rejuvenation of health. This unique Ayurvedic health guide will enrich and revolutionize the concept of health care system throughout the globe. By adapting these remedies in daily life, the health budget of the family can be minimized to zero percent, which will create an ideal record.

After the tremendous success and great demand of the book published in 2013 by our home publication, a number of international publishers have asked for the publication of the book. In this sequence, the book is now getting published in different national and international languages by world's renowned publishers.

Sr. No.	Language	Country
1-	English (US)	US
2-	Czech	Czech Republic
3-	German	German
4-	Italian	Italy
5-	Spanish	Spain
6-	French	France
7-	Latvian	Latvia
8-	Sinhala	Sri Lanka
9-	Lithuanian	Lithuania
10-	Portuquese	Portuqal
11-	Russian	Russia
12-	Estonian	Estonia
13-	Norwegian	Norway
14-	Armenian	Amrenia
15-	Irish	Ireland
16-	Georgian	Georqia
17-	Croatian	Republic of Croatia
18-	Japanese	Japan
19-	Slovenian	Slovenia
20-	Slovenian	Slovenia
21-	Chinese	China
22-	Serbain	Serbia

आहार-रोचनः

(भारतीय व्यंजन एवं मसालों के विषय में प्राचीन शा्स्त्रीय शैली मे निमिर्त संस्कृत पद्यबद्ध रचना, हिन्दी अनुवाद सहित)

आहार-रोचनम्

इस पुस्तक में आयुर्वेद एवं पाकशास्त्र की प्राचीन परम्परा के अनुरूप भारतीय व्यंजनों एवं मसालों का वर्णन संस्कृत पद्यों में प्रस्तुत किया है, साथ में उनके स्वास्थ्यवर्धक गुणों एवं रोगविशेष में उनकी उपयोगिता का निरूपण भी किया गया है। सरल हिन्दी व्याख्या में मसालों एवं व्यंजनों के निर्माण की विधियां भी दी गई हैं। इस प्रकार यह प्राचीन शास्त्रीय शैली में लिखी गई एक मौलिक एवं रुचिकर रचना है, जो भोजनपाक कला से जुड़े लोगों एवं गृहणियों के लिये विशेष रूप से उपादेय है। [मूल्य- रु. 200 (हिन्दी)]

Aahar-Rocanah

Aahar-Rocanah

This book describes the Indian cuisine and spices according to ancient tradition of Ayurveda and culinary science in the form of Sanskrit phrases along with their health promoting properties and utility in specific disease. It also provides the preparation method of spices and recipes in simple Hindi interpretation. Thus, it is an original and interesting work presented in the ancient classical style, which is especially viable for housewives and those associated with the culinary skills.

औषध-दर्शन

(आयुर्वेदीय चिकित्सा के सुपरीक्षित योगों का रोगानुसार विस्तृत विवरण)

औषध दर्शन

आचार्य श्री बालकृष्ण जी द्वारा रचित 'औषध दर्शन' (2007) आयुर्वेदिक चिकित्सा पर एक संक्षिप्त एवं लोकप्रिय पुस्तक है, जो 15 भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है। इस कृति का संशोधित संस्करण फरवरी 2014 में प्रकाशित किया गया है।

आचार्य जी द्वारा चिकित्सा में जिन औषधियों का चामत्कारिक प्रभाव कष्टसाध्य रोगों पर देखने को मिला, उन औषधियों का विवरण ही औषध दर्शन के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस छोटी-सी पुस्तक ने जहाँ एक ओर आयुर्वेदिक चिकित्सा जगत् में क्रान्ति पैदा कर दी, वहीं दूसरी ओर इस चिकित्सा पद्धति को नई ऊँचाइयाँ भी प्रदान की है। पतञ्जलि योगपीठ ने हजारों वैद्यों के माध्यम से आयुर्वेदीय चिकित्सा को राष्ट्रव्यापी बनाया है। इसी के साथ इस पुस्तक का जन-जन तक तेजी से प्रसार हुआ है। पहले यह कल्पना भी नहीं थी कि यह पुस्तक लाखों वैद्यों के चिकित्सकीय प्रशिक्षण की आधारशिला बन जाएगी। इसे लोगों ने हाथों-हाथ लिया व बड़ी तेजी से अपनाया। अब तक 15 भाषाओं में प्रकाशित औषध दर्शन की 80 लाख प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इस पुस्तक ने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में प्रसार संख्या की दृष्टि से नया कीर्तिमान बनाया है। इससे इसकी उपयोगिता व श्रेष्ठता स्वतः प्रमाणित होती है। इस पुस्तक ने लोगों में एक नई सोच

पैदा की और परम्परागत आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को नई उड़ान दी है। गागर में सागर भरने वाली इस सारगर्भित विश्वसनीय पुस्तक का वर्तमान में 14वां परिवर्धित व परिष्कृत संस्करण जनता की सेवा में उपलब्ध है।

[मूल्य- रु. 60 (हिन्दी, आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,कन्नड,उडिया,तमिल, गुजराती,तेलुगू,नेपाली,पंजाबी); रु. 30 (उर्दू)]

Ausadh-Darshan

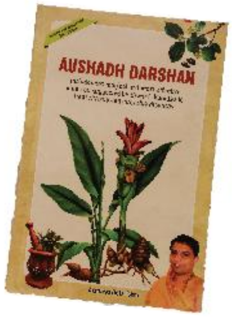

Ausadh-Darshan

Ausadh-Darshan (2007) composed by Acharya Balkrishna ji, is a brief and popular book based on Ayurvedic medicine, which has been published in 15 languages. The revised version of this book has been published in February 2014. During medical practice in the past all those medicines which exhibited miraculous effect on the chronic diseases were described and published in the form of Ausadh-Darshan. This small book not only revolutionized the medicinal world but also provided a great height to the Ayurvedic medicinal system. Patanjali Yogpeeth has spread this Medicinal System throughout the nation with the help of thousands of 'Vaidya'. Besides, the book was rapidly circulated among the common man. We never imagined that this book will turn out to be the foundation book for the training of millions of Vaidya. This book has gained rapid popularity and about 80 lakh copies of this book named 'Aushadh Darshan' have been published in 15 languages. This book has created all time record in the field of Ayurvedic medical science, which reflects its utility and excellency itself. This book provided a new dimension and direction to the traditional Ayurvedic Medicinal System. 14th revised and refined edition of this small compendium and most trustworthy book of Ayurvedic medicine with immense knowledge is currently available in public service.

जड़ी-बूटी रहस्य

(चिकित्सोपयोगी ४०० से अधिक औषधियों का विस्तृत विवरण, भाग- १,२,३)

जड़ी-बूटी रहस्य

घर-घर में अपनी जगह बना चुकी लोकप्रिय पुस्तक जड़ी-बूटी रहस्य सरल आयुर्वेदीय चिकित्सा की रोचक रचना है। इससे प्रेरणा पाकर लाखों लोगों ने स्वास्थ्यलाभ के साथ पर्यावरण व जड़ी-बूटियों के संरक्षण में भी योगदान दिया है। वर्षों से श्रद्धालु पाठकों का आग्रह था कि जड़ी-बूटी के प्रथम भाग में वर्णित सामग्री के अतिरिक्त आगे भी जड़ी-बूटियों के विषय में पुस्तक तैयार की जाए। उसी के परिणाम स्वरूप यह ग्रन्थ और भी सुन्दर व प्रामाणिक रूप में अब तीन भागों में आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें 400 से अधिक औषधीय पौधों की सर्वांगीण जानकारी के साथ-साथ चिकित्सा में उनके उपयोग की विवेचना भी है। इसमें साध्य एवं कष्टसाध्य रोगों की सटीक चिकित्सा-विधि बताई गई है। पुस्तक में पौधों के वानस्पतिक नाम आदि के साथ यथासम्भव शास्त्रीय, अनुभूत एवं परम्परागत प्रयोगों का भी विशद विवेचन किया गया है। इसमें औषधीय पौधों के सुन्दर छायाचित्र दिये गये हैं। इस प्रकार जन-जन के लिये परमोपयोगी इस पुस्तक के तीनों भाग विशेष रूप से संग्राह्य एवं पठनीय हैं। [मूल्य- रु. 2100 (भाग १-३, हिन्दी)]

Secrets of Indian Herbs for Healthy Living

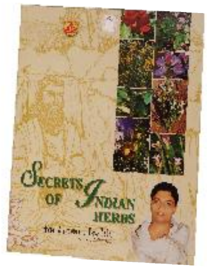

Secrets of Indian Herbs

Secrets of Indian herbs for healthy living (Jadi Buti Rahasya) has been appreciated by millions of people and has attained popularity in every house. Millions of people are benefited through this book by obtaining good health and have also provided their valuable contribution in the conservation of the environment and medicinal plants. The true inspiration from almighty God is our support and the inclination, love and affection of billions of people surely provides us good strength on the other hand. For many years, our devoted readers were insisting to add more medicinal plants, besides those described in the existing volume of this book. To fulfill their demand, now this book will be presented in a new and revised form with more beautiful pictures and authentic information

in three volumes. In this book, along with the complete detail of about 450 medicinal plants, the description of treatment methodology has been elaborated and by means of this more than 700 curable and incurable diseases have been described. In this book, along with the authentic botanical names, specific description of classical uses, self-experienced uses and traditional uses have been provided as far as possible. The forthcoming three volumes of this book will be very useful, acceptable and worth reading for human population.

आयुर्वेदीय सुभाषितावली

(स्वास्थ्य रक्षा विषयक ऋषियों के अमूल्य वचनों का संकलन, हिन्दी अनुवाद सहित)

इस पुस्तक में स्वास्थ्यरक्षा-विषयक ऋषियों के अमूल्य वचनों का संकलन हिन्दी अनुवाद के साथ किया गया है। स्वास्थ्य के सुनहरे नियमों की जानकारी प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अवश्य ही पठन योग्य है। [मूल्य- रु. (हिन्दी)]

आयुर्वेदीय सुभाषितावली

दिव्य औषधीय, सुगन्धित एवं सौंदर्यकरण पौधे

दिव्य औषधीय, सुगन्धित एवं सौंदर्यकरण पौधे

औषधीय और सजावटी पौधों के विषय में इस पुस्तक में बहुत ही रोचक एवं उपादेय जानकारी प्रस्तुत की गई है। प्रकाशन वर्ष- 2004 ई. [मूल्य- रु. 20 (हिन्दी)]

विश्व भेषज जड़ी-बूटी कोष

विश्व के सभी देशों में जडी-बूटी आधारित चिकित्सा पद्धति न्यूनाधिक रूप से प्रचलित है।

विभिन्न देशों में उपलब्ध इन औषधियों का अब तक एकत्र लिपिबद्ध वर्णन नहीं किया जा सका है, इस दिशा में यह पहला एवं विराट प्रयास है। इसके अंतर्गत विश्व में चिकित्सा हेतु प्रयुक्त औषधियों का विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन किया जा रहा है। इसका प्राथमिक रूप 2013 में प्रस्तुत किया था। आगे इसका कार्य प्रगति पर है। इस पुस्तक में दुनिया

विश्व भेषज जड़ी-बूटी कोष

की लगभग सभी भाषाओं में औषधीय पौधों के स्थानीय नाम सम्मिलित हैं। अभी तक प्रकाशित इसके दो खण्डों में 125 से अधिक भाषाओं में 10,000 औषधीय पौधों के स्थानीय नामों (लगभग 1.5 लाख स्थानीय नामों) का एक विशाल और अनूठा संग्रह है। साथ में सभी औषधीय पौधों की वानस्पतिक नामोत्पत्ति का विवेचन भी किया है। आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित लगभग 900 पौधों के 13000 से अधिक संस्कृत नाम मिलते हैं। उनका भी इसमें संकलन किया गया है और आयुर्वेदगत सभी औषधीय पौधों के वानस्पतिक नाम भी दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 3000 ऐसी जड़ी-बूटियों को प्रथम बार इस ग्रन्थ द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनकी पारम्परिक रूप से कहीं-कहीं चर्चा व प्रयोग तो होता है, परन्तु कोई व्यवस्थित लिपिबद्ध विवरण प्रकाशित नहीं है। इन जड़ी-बूटियों का विवरण संगृहीत कर इनके अनेक भाषाओं में उपलब्ध नामों का संकलन भी किया है और इनके प्रथम बार संस्कृत नाम भी निर्धारित किए गए हैं, जिससे आयुर्वेद की शास्त्रीय परम्परा के क्रम में इनकी स्थायी पहचान व नाम स्थापित हो सके।

इस ग्रन्थ में वर्णित पौधों की पहचान व उनकी प्रामाणिकता के लिए कुल मिलाकर लगभग 2800 से अधिक भारतीय जड़ी-बूटियों के पादपालय पत्र चित्र (हरबेरियम शीट फोटो) प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही सभी का वानस्पतिक नाम भी दिया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत 'विश्व भेषज जड़ी-बूटी कोष' जनसाधारण से लेकर आयुर्वेद-विशेषज्ञों, वनस्पतिशास्त्रियों, रसायनशास्त्रियों व अन्य क्षेत्र के शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा। यह विश्व भेषज जड़ी-बूटी कोष एक अभूतपूर्व विस्तृत शब्द कोष है, जो आयुर्वेद व वनस्पतिशास्त्र के क्षेत्र के विद्वानों व जिज्ञासुओं के लिए किसी दिव्य निधि से कम नहीं होगा। (हिन्दी)

Glossary of World Herbal Encyclopedia

Glossary of World Herbal Encyclopedia is the name of first authentic and voluminous text on medicinal plants names in the world, in which more than 2 lakh names of about 10,000 medicinal plants are mentioned in more than 125 languages, along with it origin of botanical names of all medicinal plants are given here. More than 13000 Saṁskṛta names of about 900 medicinal plants described in an-

Glossary of World Herbal Encyclopedia

cient Ayurvedic literature are compiled and authenticated according to modern plant science. Besides this approximately 3000 medicinal plants which are briefly described at some of the places and used traditionally but their complete description and documentation is not available are given along with their names in various languages. They have also been given Saṁskṛta names accordingly to establish their permanent identity in the classical Ayurvedic texts. For correct and authentic identification of these plants herbarium sheets of more than 2800 Indian medicinal plants have been given along with their botanical names. Besides this, more than 6000 foreign medicinal herbs have been described with their names in various languages of the world. An attempt has been made to develop their Saṁskṛta nomenclature also. In this way along with the compilation of various names in different languages of the world, newly defined Saṁskṛta names have also been added. We are sure that present Glossary of World Herbal Encyclopedia will be equally helpful for Ayurvedic scholars, botanists, chemists, research scholars and scientists of various fields.

This Glossary of World Herbal Encyclopedia is an amazing and elaborate glossary which will be a divine treasure for scholars and experts in the field of Ayurveda and botany or for those who are curious to know about medicinal herbs.

हस्तलिखित प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ प्रकाशन योजना

आयुर्वेद की पुनः प्रतिष्ठा हेतु विलुप्त ज्ञान को जन-जन तक पहुचाने के पावन अभियान के अन्तर्गत प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन का महान् प्रयास

आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली प्राचीन होने के साथ सर्वथा वैज्ञानिक भी है। आयुर्वेद के बहुत से प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ न केवल भारत में अपितु दुनिया के विभिन्न ग्रन्थालयों और संस्थाओं में उपलब्ध हैं। ये मानव जाति के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं, तथापि इनमें से बहुत सी आज तक प्रकाशित नहीं हो पाई थी। इन्हें प्रकाश मे लाने एवं आयुर्वेदिक ज्ञानसम्पदा को जन-जन तक पहुँचाने

के लिए आचार्य बालकृष्ण जी द्वारा विशेष प्रयास किया गया है। इन जटिल संस्कृत पाण्डुलिपियों का उत्तम सम्पादन एवं सरल हिन्दी अनुवाद 'पतंजलि विश्वविद्यालय की प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशन योजना' के अन्तर्गत किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत अब तक प्रकाशित दुर्लभ ग्रन्थों का विवरण निम्न प्रकार से है।

सिद्धसार-संहिता (रविगुप्त-विरचित)

सिद्धसार-संहिता

यह एक 1400 वर्ष पुरानी रचना है, जिसमें ऋषिकृत प्राचीन आयुर्वेदीय संहिताओं का सार लेकर रचा गया था। इसमें आयुर्वेद के काय-चिकित्सा आदि आठों अंगों के अंतर्गत रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। इसमें 1300 श्लोकों में आयुर्वेदीय चिकित्सा का सार संक्षेप में समाहित कर दिया है। मध्य काल में यह बहुत लोकप्रिय रचना थी, किंतु बाद में लुप्तप्राय हो गयी थी। नेपाल में उपलब्ध तालपत्रीय हस्तलिखित प्रतिलिपि के आधार पर पहली बार इसका सम्पादन व हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन किया गया है। यह आयुर्वेदीय चिकित्सा की विशिष्ट रचना है। [मूल्य- रु. 400 (हिन्दी)]

योगशतम् (अमितप्रभीयम्)

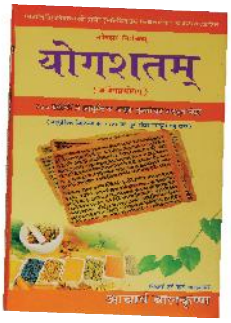

योगशतम्

'योगशत' आयुर्वेद की बहुत ही लोकप्रिय एवं महत्त्वपूर्ण रचना है। लगभग 1400 वर्ष पूर्व लिखी गयी इस रचना में आचार्य अमितप्रभ नें विशाल आयुर्वेद सागर का मंथन कर 100 श्लोकों में ही सारभूत अमृत तत्त्व समाहित कर दिया था। ऐसी रचना के लिये ही गागर में सागर भरने की कहावत चरितार्थ होती है। इसमें आयुर्वेद के 100 सर्वश्रेष्ठ योग (नुस्खे) प्रस्तुत किये गये हैं, जो बहुत ही प्रभावशाली एवं सदियों से सुपरीक्षित हैं। इस दुर्लभ ग्रन्थ की प्राचीन हस्तलिखित प्रतिलिपियों का अन्वेषण कर पहली बार उत्तम सम्पादन किया गया और हिन्दी व्याख्या के साथ इसे प्रकाशित किया गया है। यह आयुर्वेद-जगत् के लिये एक विशिष्ट उपलब्धि है। [मूल्य- रु. 100 (हिन्दी), 240 (हिन्दी स्पेशल)]

योगशत-वैद्यवल्लभा (रूपनयन-विरचित)

योगशत-वैद्यवल्लभा

योगशत के ऊपर सदियों से अनेक संस्कृत टीकायें लिखी जाती रही हैं। उनका सार लेकर वैद्याचार्य रूपनयन (12 वीं शती) नें वैद्यवल्लभा नामक प्रौढ टीका लिखी थी। अन्वेषण करने पर भारत वर्ष में इसकी चार

हस्तलिखित प्रतिलिपियां उपलब्ध हुईं। उनके आधार पर पहली बार उत्तम सम्पादन कर हिन्दी अनुवाद के साथ योगशत-वैद्यवल्लभा का प्रकाशन किया है। इस टीका के साथ योगशत का अतुलनीय महत्त्व निखरकर सामने आया है। यह ग्रन्थ वैद्य-समाज के लिये बहुत ही उपादेय है। [मूल्य- रु. 400 (हिन्दी)]

आयुर्वेद-महोदधि / सुषेण-निघण्टु (सुषेणवैद्य-विरचित)

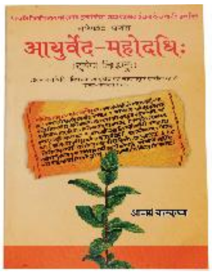

आयुर्वेद-महोदधि

यह अन्नपानविधि-विषयक प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ है। इसमें बहुत ही सरस एवं रोचक शैली में भोज्य द्रव्यों के गुणों का सर्वांगीण वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त उष:पान, व्यायाम, अभ्यंग, स्नान आदि दिनचर्या के अंगों का भी उत्तम विवेचन किया गया है। पुरातन हस्तलिखित प्रतिलिपियों के आधार पर पहली बार उत्तम सम्पादन कर हिन्दी अनुवाद के साथ इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया गया है। [मूल्य- रु. 125 (हिन्दी)]

भोजनकुतूहलम् (रघुनाथसूरि-विरचित)

भोजनकुतूहलम्

प्राचीन आयुर्वेदीय संहिताओं में उपलब्ध भोजन विषयक विस्तृत जानकारी का एकत्र सुव्यवस्थित रूप में संकलन कर 17 वीं शताब्दी में कोंकण (महाराष्ट्र) के निवासी पण्डित रघुनाथसूरि ने भोजन-कुतूहल नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह भोजन विषयक व्यापक ज्ञान के लिये विश्वकोष के समान है। इसमें भोज्य द्रव्यों के गुण, प्रभाव आदि के विषय में विशद विवेचन किया है और नानाविध भोज्य द्रव्यों की पाकविधि का निरूपण भी किया है। भोजन करने के प्राचीन विधि-विधान की रोचक जानकारी भी दी गयी है। आयुर्वेद एवं पाकशास्त्र से सम्बद्ध यह ग्रन्थ जनसाधारण के लिये बहुत ही उपयोगी है। कतिपय प्राचीन हस्तलिखित प्रतिलिपियों के आधार पर उत्तम सम्पादन कर हिन्दी व्याख्या के साथ इसे पहली बार प्रकाशित किया गया है। [मूल्य- रु. 399 (हिन्दी)]

अजीर्णामृतमञ्जरी (काशिनाथ-विरचित)

अजीर्णामृतमञ्जरी

आयुर्वेद में अजीर्ण (अपच) को रोगों का मूल कहा है। अजीर्णामृतमञ्जरी नामक इस लघु रचना में अजीर्ण का निवारण करने के उत्तम उपाय बतलाये गये हैं। मूलत: संस्कृत में लिखी गयी इस प्राचीन रचना का हस्तलिखित प्रतिलिपियों के आधार पर शोधन कर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तिका के साथ ही महर्षि कश्यप द्वारा बताये गये भोजन के 24 विशिष्ट विधान भी प्रस्तुत किये गये हैं। [मूल्य- रु. 99 (हिन्दी)]

रुचिवधू-गल-रत्नमाला (परप्रणव-विरचित)

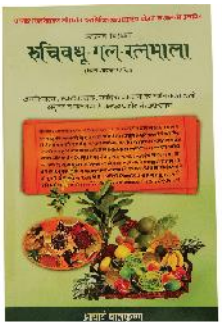

रुचि वधू-
गल-रत्नमाला

यह प्राचीन पाकशास्त्रीय परम्परा एवं आयुर्वेद से सम्बद्ध एक बहुत ही रोचक एवं लघु रचना है, जो संस्कृत के सुंदर, सुललित छंदों में निबद्ध है। इसमें अरुचि (भोजन-विषयक अनिच्छा) का निवारण करने बाले बहुत ही उत्तम शाकाहारी व्यंजनों का वर्णन किया गया है, जो अरुचि को दूर कर क्षुधा (भूख) को जागृत करते हैं और स्वास्थ्य-वर्धक होते हैं। इसमें व्यंजनों के निर्माण की विधि भी सरलता पूर्वक बताई गई है। प्राचीन ग्रन्थों का अन्वेषण करते समय यह सुन्दर रचना अकस्मात् हमारे हाथ लगी। इसके महत्त्व एवं उपयोगिता को देखते हुए हमने इसका उत्तम सम्पादन कर हिन्दी व्याख्या के साथ पहली बार प्रकाशन किया है। [मूल्य- रु. 110 (हिन्दी)]

हरमेखला (माधुक-विरचित)

महाकवि माघ के वंशज माधुक पण्डित (नवीं सदी ई.) द्वारा रचित हरमेखला भारतीय साहित्य की एक चर्चित रचना है। इसके चतुर्थ परिच्छेद में आयुर्वेदीय चिकित्सा के सारभूत योगों (नुस्खों) का वर्णन है। इसके पंचम परिच्छेद में गन्धशास्त्र विषयक वर्णन है। प्रस्तुत संस्करण में इन दोनों का हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। नेपाल में उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित प्रतिलिपियों के आधार पर इसका संशोधन कर प्रथम बार हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन किया गया है। [मूल्य- रु. 450 (हिन्दी)]

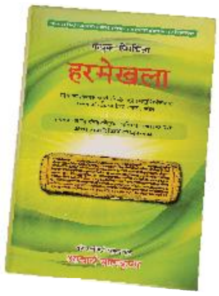

हरमेखला

योगरत्न समुच्चयः (चन्द्रट-विरचित)

योगरत्न समुच्चयः

50 से अधिक प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों से उत्तमोत्तम योगों (नुस्खों) का चयन कर कश्मीरी वैद्यराज 'चन्द्रट' ने लगभग 1100 वर्ष पूर्व इस महत्त्वपूर्ण आयुर्वेदीय ग्रन्थ का गुम्फन किया था। यह रचना पुरातन वैद्य-समाज में बहुत ही सम्मानित थी, परंतु काल के प्रवाह में लुप्तप्राय हो गयी थी। बहुत अन्वेषण करने पर हमें भारतवर्ष में इसकी पांच हस्तलिखित प्रतिलिपियां मिलीं। उन्हीं के आधार पर इस दुर्लभ ग्रन्थ का उत्तम सम्पादन कर हिन्दी अनुवाद के साथ पहली बार प्रकाशन किया गया है। यह विशाल ग्रन्थ (700 पृष्ठों में पूर्ण) आयुर्वेद-जगत् की एक विशिष्ट निधि है, जिसे खोज कर जनता की सेवा में प्रस्तुत किया गया है। [मूल्य- रु. 600 (हिन्दी)]

वैद्यशतश्लोकी (अवधानसरस्वती-विरचित)

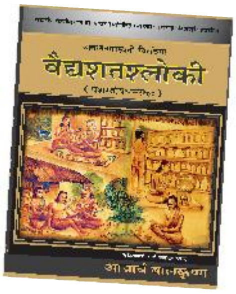
वैद्यशतश्लोकी

दक्षिण भारत के विलक्षण कवित्वशक्ति से सम्पन्न विद्वान् अवधानसरस्वती (15वीं सदी ई) की रचना वैद्यशतश्लोकी का दूसरा नाम 'प्रशस्तौषधसंग्रह' भी है। इस ग्रन्थ में ज्वरचिकित्पसोयोगी प्रशस्त औषधियों के वर्णन से लेकर रसायन-वाजीकरण चिकित्पसोयोगी श्रेष्ठ औषधियों के वर्णन तक का विषय है। यह काय-चिकित्सा आदि आयुर्वेद के आठ अंगों से सम्बद्ध है। इस प्रकार यह ग्रन्थ लघुकलेवर होते हुए बहुत ही सारपूर्ण एवं उपादेय सामग्री से विभूषित है। ग्रन्थगत वर्णन सरस, सुललित छन्दों में संक्षिप्त रूप से किया गया है, अतः आयुर्वेद के अध्येताओं, अध्यापकों एवं चिकित्सकों के लिए बहुत ही ग्राह्य एवं रुचिकर है। [मूल्य- रु. ... (हिन्दी)]

चन्द्र-निघण्टु / मदनादि-निघण्टु (चन्द्रनन्दन-विरचित)

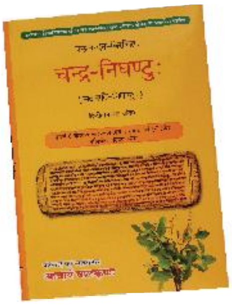
चन्द्र-निघण्टु

कश्मीरवासी वैद्यशिरोमणि चन्द्रनन्दन द्वारा रचित 10 वीं शती ई. की एक प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण रचना है। अब तक यह अप्रकाशित थी। इस दुर्लभ ग्रन्थ का विभिन्न प्राचीन हस्तलिपियों के आधार पर हिन्दी-भाषान्तर सहित उत्तम सम्पादन कर पहली बार प्रकाशन किया गया है। चन्द्रनिघण्टु के पूर्व भाग में अष्टांगहृदय का अनुसरण करते हुए आयुर्वेद के वमनीय, विरेचनीय आदि 33 गणों के अन्तर्गत परिगणित द्रव्यों के नाम-रूप, गुण-कर्म आदि का विशद वर्णन मिलता है। इसके उत्तर भाग में नाना प्राचीन ग्रन्थों विप्रकीर्ण रूप से उपलब्ध औषधीय द्रव्यों का विवेचन मिलता है तथा आयुर्वेदोपयोगी शब्दसंग्रह भी किया गया है। इस प्रकार यह प्राचीन ग्रन्थ आयुर्वेद के जिज्ञासुओं, छात्रों तथा अध्यापकों के लिये विशेष रूप से उपादेय है। [मूल्य- रु. 300 (हिन्दी)]

हृदयदीपक-निघण्टु (बोपदेव-विरचित)

हृदयदीपक-निघण्टु

आयुर्वेदीय निघण्टु-ग्रन्थों की परम्परा में 14 वीं शती ई. में महान् आयुर्वेदज्ञ पण्डित बोपदेव द्वारा रचित हृदयदीपक-निघण्टु एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। यह निघण्टु चतुष्पाद, त्रिपाद, द्विपाद, एकपाद, द्विनाम, एकनाम, नानार्थ और मिश्रक- इन आठ वर्गों में विभक्त है। इस प्रकार विशिष्ट शैली में रचा गया यह ग्रन्थ संक्षिप्त होते हुए भी विषय-प्रतिपादन, गाम्भीर्य एवं रचना-कौशल के कारण बहुत ही उपादेय है। [मूल्य- रु. ... (हिन्दी)]

राजनिघण्टु

राजनिघण्टु

कश्मीरी पण्डित नरहरिभट्ट द्वारा रचित राजनिघण्टु आयुर्वेद का प्राचीन शोधपूर्ण ग्रन्थ है। औषधीय द्रव्यों के परिचय के विषय में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इसके रचयिता भट्टनरहरि ने कश्मीर से केरल पर्यन्त पद यात्रा करते हुए औषधीय पौधों का साक्षात् अवलोकन एवं अन्वेषण करने के बाद इसमें सुपरीक्षित तथ्यों का वर्णन किया है। अत एव इसमें औषधियों के प्रान्तीय नामों का भी समावेश मिलता है। आयुर्वेद के निघण्टु साहित्य में यह शिरोमणि ग्रन्थ है। इसलिए इसकी 'राजनिघण्टु' संज्ञा सार्थक ही है।

सोढलनिघण्टु (सोढल-विरचित)

वैद्यराज सोढल 12 वीं शती ई. में गुजरात के प्रसिद्ध वैद्य थे। इनका गदनिग्रह नामक विशाल ग्रन्थ बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है। इन्होंने गुणसंग्रह नामक निघण्टु ग्रन्थ रचा था, जो सोढलनिघण्टु नाम से प्रसिद्ध है। इसमें द्रव्यगुण विषय ज्ञान परम्परा का सुन्दर समावेश है।

सोढलनिघण्टु

मदनपालनिघण्टु (नृपमदनपाल-विरचित)
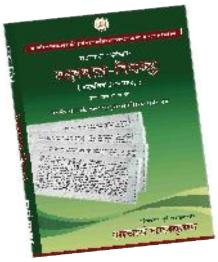
मदनपालनिघण्टु

यह 14 वीं शती ई. में रची गयी निघण्टु-विषयक एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसके ऊपर एक विशद संस्कृत टीका भी उपलब्ध है। इस निघण्टु का प्रकाशन किया गया है। इसका टीका सहित शुद्ध संस्करण अपेक्षित है। जिसका भविष्य में प्रकाशन करने की योजना है।

धन्वन्तरिनिघण्टु (महेंद्रभोगी-विरचित)

आयुर्वेद के निघण्टु ग्रन्थों की परम्परा में 8 वीं शती ई. में रचा गया धन्वन्तरिनिघण्टु सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह द्रव्यावली नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन काल में सम्पूर्ण देश में धन्वन्तरिनिघण्टु का प्रचार रहा। अत: सर्वत्र इसकी हस्तलिखित प्रतिलिपियां मिलती हैं इसके समीक्षात्मक एवं परिष्कृत संस्करण की महती आवश्यकता है।

धन्वन्तरिनिघण्टु

वैद्यप्रसारकम् (वैद्य गदाधर-विरचित)

वैद्यप्रसारकम्

यह आयुर्वेदीय योगों का प्राचीन संकलन है, जिसे निश्चलकर (12वीं सदी ई.) ने चक्रदत्त-रत्नप्रभा में बहुमान पूर्वक अनेक बार उद्धृत किया है, हमें इसकी एक पुरातन हस्तलिखित प्रतिलिपि मिली है, जिसके आधार पर इस ग्रन्थ का समीक्षात्मक सम्पादन किया गया है।

प्रकाशनाधीन प्राचीन आयुर्वेदीय हस्तलिखित ग्रन्थ

आयुर्वेद-सौख्यम् (टोडरानन्दः)

यह महाराज टोडरमल्ल द्वारा रचित आयुर्वेद विषयक विस्तृत ग्रन्थ है। इसमें पुरातन आयुर्वेदीय संहिताओं का सारसंग्रह किया गया है। इस ग्रन्थ में बहुत-सी प्राचीन एवं दुर्लभ आयुर्वेदीय रचनाओं के उद्धरण सुरक्षित हैं, अत: इसका विशेष ऐतिहासिक महत्त्व है। आयुर्वेद के निघण्टु आदि सभी अंगों का इस ग्रन्थ में एकत्र वर्णन है। 15 वीं सदी ई. तक प्रचलित चिकित्सा के सभी अंगों का समावेश करते हुए इसे आयुर्वेदीय विश्वकोष के रूप में तैयार किया गया था।

अश्वनीकुमार-संहिता (अश्वनीकुमार-विरचित)

अश्वनीकुमार देवों के वैद्य माने जाते हैं। आयुर्वेद के इतिहास में उल्लेख है कि इन्होंने दक्ष प्रजापति से आयुर्वेद का अध्ययन कर उसे लोकहित में प्रचारित किया था। इनके द्वारा रचित संहिता 'अश्वनीकुमार-संहिता' नाम से प्रसिद्ध रही है। जिसे २ सहस्राब्दी पूर्व 'नावनीतकम्' नामक ग्रन्थ में भी उद्धृत किया गया है। चन्द्रट (10 वीं शती ई.) ने योगरत्नसमुच्चय एवं निश्चलकर (12 वीं शती ई.) ने चक्रदत्तरत्नप्रभा में अश्वनीकुमार-संहिता से अनेक योग उद्धृत किये हैं। अनेक हस्तलिखित ग्रन्थागारों में 'अश्वनीकुमार-संहिता' की खण्डित हस्तलिखित प्रतिलिपियां उपलब्ध हैं, उनके आधार पर इसका सम्पादन किया जाना प्रस्तावित है।

अष्टांगहृदय-पदार्थचन्द्रिका टीका (चन्द्रनन्दन-विरचित)

चन्द्रनन्दन (10 वीं शती ई.) कश्मीरप्रदेशवासी आयुर्वेद के महान् विद्वान् थे। इनकी अष्टांगहृदय पर पदार्थचंद्रिका नामक टीका पुरातन काल में वैद्य समाज में प्रसिद्ध रही है, परन्तु यह टीका सूत्रस्थान तक ही प्रकाशित हुई है। इसकी हस्तलिखित प्रतिलिपियां सूत्रस्थान से आगे वाले भाग पर भी उपलब्ध हैं, उनके आधार पर इसका समीक्षात्मक सम्पादन अपेक्षित है।

क्षेमकुतूहलसार (पाक-शास्त्र विषयक ग्रन्थ क्षेमकुतूहल का संक्षिप्त संस्करण)

15 वीं शती में क्षेमकुतूहल शर्मा नामक वैद्य ने आयुर्वेद एवं पाकशास्त्र से सम्बद्ध क्षेमकुतूहल नामक विस्तृत ग्रन्थ की रचना की थी। इसके सारांश को क्षेमकुतूहलसार नाम से प्रकाशित करना प्रस्तावित है, जिसमें सात्त्विक शाकाहारी भोजनपाक-विधि का वर्णन समाविष्ट होगा।

चक्रदत्त-तत्त्वचन्द्रिका टीका (शिवदाससेन-विरचित)

शिवदाशसेन (15 वीं शती ई.) बंगवासी आयुर्वेद के महान् विद्वान् थे, उन्होंने अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थों पर उत्तम संस्कृत टीकायें लिखी थी, उन्ही में से चक्रदत्त-तत्त्वचन्द्रिका एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय चिकित्सा का सार वर्णित है।

चक्रदत्त-रत्नप्रभा (निश्चलकर-विरचित)

निश्चलकर (12 वीं शती ई.) मूल ग्रन्थ चक्रदत्त में १० वीं शती ई. तक विकसित हो चुकी आयुर्वेदीय चिकित्सा का सार संगृहीत किया गया है, अत एव चक्रदत्त का दूसरा नाम 'चिकित्सासार- संग्रह' है। इस पर निश्चलकर की रत्नप्रभा टीका आयुर्वेद साहित्य में अद्वितीय रचना है। इसके रचयिता निश्चलकर बहुश्रुत एवं विलक्षण विद्वान् थे, जिनका आयुर्वेद-विषयक अगाध ज्ञान बहुत ही व्यापक एवं आश्चर्यकारक था, जिसमें उनका लोकोत्तर वैदुष्य दिखता है। इस ग्रन्थ का अभी तक कोई अखण्डित व सुपरिष्कृत संस्करण नहीं है।

चारुचर्या

(महाराज भोजदेव विरचित दिनचर्या विषयक आयुर्वेदीय ग्रन्थ, 11 वीं शती ई.)

इसमें आयुर्वेद के दिनचर्या विषय पर प्राचीन वचनों का बहुत ही अमूल्य संग्रह है। यह आरोग्य प्राप्ति के लिये आयुर्वेद के दिनचर्या विषय का परिज्ञान प्रत्येक आरोग्याभिलाषी के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

चिकित्सामृतम् (मिल्हण-विरचित)

लगभग 850 वर्ष पूर्व ढिल्लिका (दिल्ली) में मिल्हण नामक वैद्याचार्य द्वारा रची गयी यह आयुर्वेद की एक महत्त्वपूर्ण रचना है, जिसमें रोगों की चिकित्सा का वर्णन सुन्दर एवं सुललित संस्कृत छन्दों में किया गया है। आयुर्वेद के इतिहास में इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का विशेष उल्लेख है, परंतु बहुत अन्वेषण करने पर भी भारतवर्ष में इसकी कोई हस्तलिखित प्रतिलिपि प्राप्त नहीं हो सकी, अंतत: बहुत प्रयास करने पर नेपाल से इस दुर्लभ ग्रन्थ की दो हस्तलिखित प्रतिलिपियां उपलब्ध हुई हैं। उन्ही के आधार पर इसका सम्पादन किया जा रहा है। आशा है शीघ्र ही यह ग्रन्थ प्रकाशित रूप में उपलब्ध हो सकेगा।

ज्वर-समुच्चय (ज्वरचिकित्सा-विषयक प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ)

इसमें सर्वविध ज्वर की सर्वांगीण चिकित्सा का वर्णन है। पुरातन संहिताओं में प्रकीर्ण ज्वर चिकित्सा विषय को इस ग्रन्थ में एकत्र ही व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया है। इससे ज्वर विषयक सम्पूर्ण चिकित्सा को सुगमता से जाना जा सकता है।

सारावली (शिवदाससेन-विरचित- 15वीं सदी ई.)

शिवदाससेन वंगवासी आयुर्वेद के विद्वानों में शिरोमणि वैद्य थे। इन्होंने आयुर्वेद के अनेक ग्रन्थों की महत्त्वपूर्ण टीकायें रची हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में आयुर्वेद का सार संग्रह किया गया है, जिसमें १५ शती तक विकसित आयुर्वेदीय चिकित्सा के सभी पक्षों का समावेश किया गया है। भारतवर्ष में इसकी दो हस्तलिखित प्रतिलिपियां उपलब्ध हैं, उनके आधार पर इसके उत्तम सम्पादन की योजना है।

द्विशती (हरदत्तपुत्र-विरचित)

यह ज्वरचिकित्सा-विषयक संक्षिप्त प्राचीन रचना है। इसमें निदान के साथ ज्वर रोग की संक्षिप्त एवं सुगम चिकित्सा वर्णित हैं।

नावनीतकम् (भिक्षु यशोमित्र-विरचित)

यह 2000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन आयुर्वेद का सारसंग्रहात्मक ग्रन्थ है, जो विगत शताब्दी में एक प्राचीन बौद्धस्तूप के खण्डहरों में दबा हुआ मिला था। इसमें आयुर्वेद के ऐसे चुने हुए योग (नुस्खे) संकलित हैं, जो बहुत ही सरल किन्तु अत्यंत प्रभावशाली हैं।

योगसुधानिधि (वन्दिमिश्र-विरचित)

यह स्त्री एवं बालचिकित्सा का बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ ग्रंथ है। इसमें बंध्यत्व आदि स्त्री रोगों का विस्तार से उपचार बताया गया है। सभी बाल रोगों की चिकित्सा भी विस्तार से वर्णित की गयी है। यह ग्रंन्थ २० कलाओं (अध्यायों) में पूर्ण हुआ है।

योगरत्नावली (श्रीकण्ठदत्त-विरचित)

श्रीकण्ठदत्त 12 वीं सदी ई. में आयुर्वेद के शिरोमणि विद्वान हुए हैं। माधवनिदान के उत्तर भाग पर इनकी मधुकोष व्याख्या एवं वृन्दमाधव पर व्याख्याकुसुमावलि प्रसिद्ध रचना हैं, जिनसे इनकी अगाध विद्वत्ता सूचित होती है। योगारत्नावली इनकी

मौलिक रचना है, जो अभी तक अप्रकाशित है। इसमें आयुर्वेदीय चिकित्सा के अत्यंत प्रभावशाली योगों का वर्णन किया गया है।

योगरत्न-समुच्चय (अनन्तकुमार-विरचित)

यह केरल में रचित लगभग ५०० वर्ष पुरानी आयुर्वेदीय चिकित्सा की एक दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें १७० से अधिक अति प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों के उद्धरण सुरक्षित हैं। अभी तक इसका कोई सुपरिष्कृत संस्करण तैयार नहीं हुआ है। इसकी बहुत-सी तालपत्रीय प्रतिलिपियां केरल में उपलब्ध हैं, उनके आधार पर इसका समीक्षात्मक सम्पादन कर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन की योजना है।

रसवैशेषिकसूत्रम् / आरोग्यशास्त्रम् (नागर्जुन-विरचित)

8वीं सदी ई. में रचा गया यह आयुर्वेदीय चिकित्सा विषयक दार्शनिक चिन्तन युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। हिन्दी अनुवाद के साथ इसके परिष्कृत सम्पादन की योजना है।

वाग्भटमण्डनम् (नरहरि-विरचित)

यह अष्टांगहृदय विषयक एक समालोचनात्मक ग्रन्थ है, जो आक्षेप-समाधानात्मक एक विशिष्ट शैली में रचा गया है। हिन्दी अनुवाद के साथ इसके परिष्कृत सम्पादन की योजना है।

वृद्धयोगशतम्

इसमें चिकित्सा-विषयक आयुर्वेदीय योगों का प्राचीन संकलन है। इसकी कतिपय हस्तलिखित प्रतिलिपियां उपलब्ध हुई हैं। उनके आधार पर इसके परिष्कृत सम्पादन की योजना है।

सिद्धयोग-व्याख्याकुसुमावली टीका (श्रीकण्ठ-विरचित)

यह 'सिद्धयोग' की प्राचीन संस्कृत टीका है, जिसके रचयिता श्रीकण्ठ मधुकोषकार विजयरक्षित के शिष्य थे। व्याख्याकुसुमावली बहुत ही प्रौढतापूर्ण दुर्लभ रचना है।

सूपशास्त्रम् (भीमसेन-विरचित)

यह पाकशास्त्र विषयक प्राचीन ग्रन्थ है, जिसे भीमसेन द्वारा रचित माना जाता है। इसकी कतिपय हस्तलिखित प्रतिलिपियां भारतवर्ष में उपलब्ध हैं, उनके आधार पर इसके परिष्कृत सम्पादन की योजना है।

हंसराजनिदानम् / भिषक्चक्रचित्तोत्सव: (हंसराज-विरचित)

यह आयुर्वेदीय निदान विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो नानाविध सुललित एवं रोचक छन्दों में रचा गया है, हमें इसकी चार हस्तलिखित प्रतिलिपियां मिली हैं, जिनके आधार पर इसका समीक्षात्मक सम्पादन किया जा रहा है।

हृदयाप्रिय

यह केरल में रचित अष्टांगहृदय का संक्षिप्त सार रूप ग्रन्थ है। इसमें रचयिता के द्वारा स्थान-स्थान पर मौलिक प्रतिपादन भी किया गया है। इसका परिष्कृत संस्करण तैयार करने की योजना है।

विद्यालयों हेतु-योग शिक्षा का पाठ्यक्रम (Books on Yoga Education)

योग के इतिहास में पहली बार योग-सम्बन्धी क्रियाओं को सरल, बोधगम्य और स्पष्ट शब्दों में पुस्तकों और गाइड के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे योग का विद्यालय के पाठ्यक्रम में समावेश हो सके और योग विद्यार्थियों, अध्यापकों और आम जनता तक सरलता से पहुँच सके। ये पुस्तकें शिक्षा में योगविज्ञान को स्थापित करने के उद्देश्य से 2010 ई. में हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में एक शृंखला के रूप में प्रकाशित की गयी थी। अब इस शृंखला में असमी, गुजराती, उड़िया, मराठी, पंजाबी और नेपाली जैसी विभिन्न भाषाएं जुड़ चुकी हैं। यह पूरी तरह से एक नई अवधारणा है, जिसके अनुसार योग पर आधारित इन पाठ्य-पुस्तकों को डब्ल्यूएचओ और एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित मानकों को ध्यान में रखते तैयार किया गया है।

For the first time in the history of Yogic world, Yoga activities are brought out in a simple, comprehensive and easy to understand booklets and Yoga manuals to become a part of school curriculum (from class I to VI) for the children, teachers, common man and for the public in general. The books were released in a series in both Hindi and English in 2010 with the concept of establishing Yogic Science in Education. Now this series is published in various different languages like Assamese, Gujarati, Oriya, Marathi, Punjabi and

Nepali. This is altogether a new concept where these syllabus books and modules on Yoga are designed keeping in mind the module prescribed by WHO and NCERT.

खेल-खेल में योग

खेल-खेल में योग

यह वर्ग प्रथम और द्वितीय के विद्यार्थियों के लिए योगशिक्षा पर आधारित पाठ्य-पुस्तक है। इसमें प्राथमिक छात्रों को योग के प्रति अभिमुख करने के लिये सरल एवं रोचक रूप में योग की जानकारी दी गयी है, जिससे बच्चों में योग के प्रति रुचि जागृत हो सके और उनके मन मे योग के प्रति गौरव का भाव दृढ हो सके। [मूल्य- रु. 55 (बंगाली, आसामी, गुजराती,मलयालम,नेपाली,उडिया, पंजाबी); रु. 75 (हिन्दी,मराठी)]

YOGA- PLAY AND LEARN

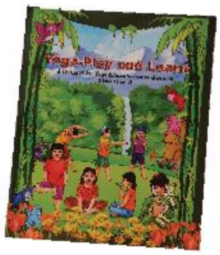
YOGA- PLAY AND LEARN

It is a textbook based on Yoga Education for students of Class I & II. This book provides simple and interesting information for primary students to motivate them towards Yoga. In which children can be awakened interest in Yoga and can be determined about Yoga.

आओ सीखें योग

(हिन्दी,आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,नेपाली,उडिया,पंजाबी,गुजराती,तेलुगू)

आओ सीखें योग

यह वर्ग तृतीय, चतुर्थ, पंचम और षष्ठ के विद्यार्थियों के लिए योगशिक्षा पर आधारित एक पाठ्यपुस्तक है। इसमें योग की जानकारी छात्रों की अवस्था के अनुसार कुछ उच्चस्तरीय रूप में प्रस्तुत की गयी है। इसका उद्देश्य बच्चों को क्रियात्मक योगाभ्यास कराने के साथ इनमें काम, क्रोध आदि मानसिक आवेगों को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित करना भी है। जिससे वे समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का उत्तमता से निर्वाह कर सकें तथा अपने जीवन को संतुलित एवं उल्लासमय बना सकें।

LET US LEARN YOGA

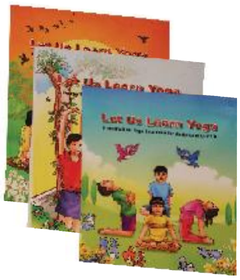

LET US LEARN YOGA

It is a textbook based on Yoga Education for students of class III, IV, V and VI. In this book, Yoga information is presented in a high level according to state of students. Its purpose is to provide children practical exercises along with development of ability to control mental impulses, lust and anger. So that they can subsist duties gracefully towards the society and the nation and can make their life balanced and lighthearted.

योग और बचपन

योग और बचपन

देश विदेश के अनेकों शिक्षकों एवं अभिभावकों, बच्चों के अत्यन्त आग्रह पर सभी आयु-वर्ग के बच्चों को ध्यान में रखते हुए सरल व्यायाम, आसन, हस्तमुद्राएं, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार, यौगिक जोंगिग आदि योग के सभी महत्वपूर्ण विषयों से युक्त सुन्दर चित्रावली सहित आकर्षक एवं बच्चों में योग के प्रति रुचि पैदा करने वाली अपनी तरह की पहली अनोखी पुस्तक है।

GROW WITH YOGA

LEARN YOGA WHILE PLAYING

On the special exhortation of many teachers, parents and children from around the world, we are presenting this unique but first of its kind book by keeping in mind the children of all age groups to produce interest in yoga with simple or easy exercises, postures, hand configrations, pranayam, sun-salutation and yogic jogging etc. all important yoga-subjects with beautiful picturization.

योगशिक्षा का पाठ्यक्रम (हिन्दी)

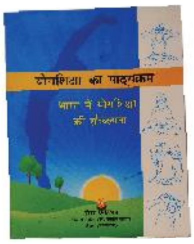

योगशिक्षा का पाठ्यक्रम

इस पुस्तिका में भारत में योगशिक्षा की संकल्पना के अनुसार अपेक्षित योगविषयक पाठ्यक्रम का विवरण दिया गया है। इसके अन्तर्गत वर्तमान में योगशिक्षा की स्थिति, किशोरावस्था वाले छात्रों के लिये आवश्यकतानुरूप पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों के स्तर तथा पाठ्यक्रम की विशेषताएं आदि बिंदुओं पर विचार किया गया है।

Syllabus of Yoga:

Syllabus of Yoga:

In this booklet syllabus of Yoga is given according to concept of Yoga education in India. The present status of Yoga education, Yoga syllabus suitable for the students of young age, standard of syllabus books and features of syllabus, etc. some important points has been described.

योग-संदर्शिका

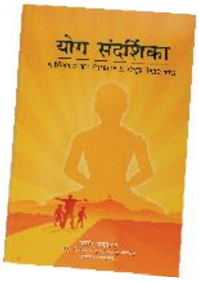

योग-संदर्शिका

योगशिक्षा को छात्रों के लिये रुचिकर एवं ग्राह्य बनाने के लिये आवश्यक निर्देशों को प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तिका योगशिक्षकों एवं अभिभावकों के लिये लिखी गयी है। इसमें योगविषयक नवनिर्मित, पाठ्यपुस्तकों का परिचय, माध्यमिक स्तर पर प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक शिक्षण आदि का वर्णन किया किया गया है। इसके साथ ही पातंजल योगसूत्र का परिचय, योग में बाधक तत्त्वों का विवेचन, शरीरक्रिया-विज्ञान एवं योगाभ्यास की प्रक्रिया का निरूपण किया गया है।

Yoga manual for Parents and Teachers:

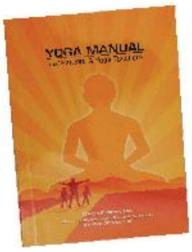

Yoga manual

This booklet comprises of important instructions for parents and teachers to make Yoga education interesting and adaptable to students. Introduction of newly formed syllabus related to Yoga, fundamentals and practical approach for primary level, etc. has been described in it. Along with this, an introduction of Patanjal Yogsutra, obstacles of Yoga, physiology and methods of Yoga exercise are described.

॥ पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित योग-विषयक ग्रन्थ ॥

योग-दर्शन (हिन्दी)

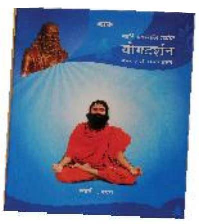
योग-दर्शन

महर्षि पतंजलि प्रणीत योगदर्शन योगविद्या का आकर ग्रन्थ है। प्रस्तुत पुस्तक में इसकी सरल हिन्दी व्याख्या दी गयी है, जो योग के जिज्ञासुओं के लिये विशेष रूप से उपादेय है।

प्राणायाम रहस्य

(हिन्दी,पंजाबी,नेपाली,उर्दू,अंग्रेजी,आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,
कन्नड,उडिया,गुजराती,तेलुगू)

प्राणायाम स्वास्थ्य-प्राप्ति एवं रोग निवारण का अचूक उपाय तो है ही, साथ में ही मन की एकाग्रता द्वारा यह अन्तरंग योग की सिद्धि में भी परम सहायक है। प्रस्तुत पुस्तक में प्राणायम विषय का सर्वांगीण विवेचन किया गया है, जो योगसाधकों के लिये विशेष रूप से उपादेय है।

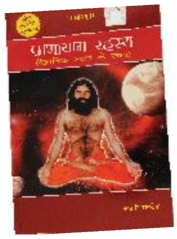

प्राणायाम रहस्य

Pranayam Rahasya

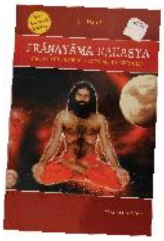

Pranayam Rahasya

Pranayam is sure way of attaining good health and treatment for diseased one along with this it is helpful in attainment of divine internal Yoga energy through concentration of mind. Present book interprets the overall knowledge of Pranayam which is highly useful for Yoga practioners.

प्राणायाम रहस्य (जापानी)

यह उपर्युक्त पुस्तक का ही जापानी भाषा में अनुवाद है।

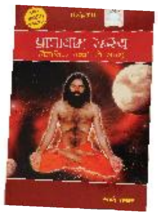

प्राणायाम रहस्य

विज्ञान की कसौटी पर योग (हिन्दी)

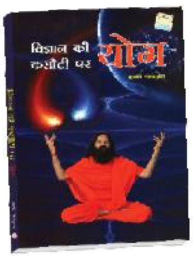

विज्ञान की कसौटी पर योग

विश्व में प्रथम बार योगऋषि स्वामी रामदेव ने यह घोषणा की - "योग सम्पूर्ण चिकित्सा विज्ञान है" तब अनेक लोगों ने विविध प्रश्न और शंकाएं प्रकट की, उनका आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के मापदण्ड के अनुरूप वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रमाणों के साथ समाधान का नाम है- 'विज्ञान की कसौटी पर योग'। इस पुस्तक में योग-विज्ञान के व्यापक प्रभाव को प्रमाणों व अनेक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है, योग की वैज्ञानिकता को बताने वाला यह विश्व का एक अनुपम व उत्तम ग्रन्थ है।

Yoga in Synergy with Medical Science

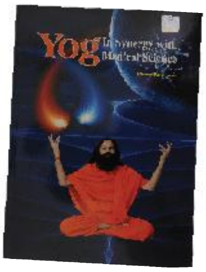

Yoga in Synergy with Medical Science

For the first time when Yogrishi Swami Ramdev Ji anounced that 'Yoga is complete medical science', then various people raised different queries and doubts. 'Yoga in synergy with medical science' is the solution for those queries and doubts based on modern medical science with scientific facts and proofs. This is world's unique and best treatise with the presentation of massive effect of Yoga on the basis of proofs and various examples.

योगाष्टकम्

(योग के आठ अंग, अष्ट प्राणायाम एवं अष्टचक्र विषयक संस्कृत पद्यबद्ध मौलिक ग्रन्थ, हिन्दी अनुवाद सहित)

योगाष्टकम्

योग के परम्परागत स्वरूप को वैज्ञानिक तथ्यों के साथ प्रस्तुत करने वाली यह एक विशिष्ट मौलिक रचना है, जो प्राचीन शास्त्रीय शैली के अनुरूप मूल रूप से संस्कृत श्लोकों में निबद्ध की गयी है। इसके साथ हिन्दी व्याख्या भी दी गयी है। इसमें मुख्य रूप से योग के तीन अष्टकों का वर्णन है। प्रथम अष्टक के अन्तर्गत योग के आठ अंगों का पातंजल योगसूत्र के अनुसार विवेचन किया गया है। तदनन्तर द्वितीय अष्टक में आठ मुख्य प्राणायामों का विशद वर्णन किया गया है। अग्रिम अष्टक के अन्तर्गत मूलाधार आदि आठ चक्रों का निरूपण वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर किया गया है, जो योगसाधकों के लिये विशेष रूप से पठनीय है। इस प्रकार यह रचना साधकों की ज्ञानवृद्धि एवं मागदर्शन के लिये बहुत ही उपयोगी है।

Yogastakam

Yogastakam

This is a unique elemental composition of traditional Yoga with scientific facts presented in the ancient classical style with original Sanskrit verses and Hindi translation. It mainly describes the primary three Astaks of Yoga. In first Astaka eight parts of Yoga are being described according to Patanjal Yogsutra. Then in second Astaka the detailed description of

eight chief Pranayam. Next Astaka describes the Muladhar, etc. eight chakrasin accordance to scientific facts which are must studied by the Yoga scholars. In this way it is very useful for knowledge enhancement and proper guidance of scholars.

दैनंदिन योगाभ्यास (हिन्दी, नेपाली, अंग्रेजी)

इसमें स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा बताये गये दैनंदिन योगाभ्यास का वर्णन है। इसमें अभ्यास क्रम का बहुत उत्तम समायोजन है, जो सुंदर चित्रावलि के साथ प्रस्तुत किया गया है।

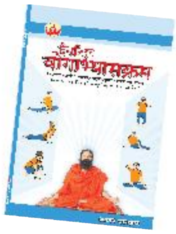

दैनंदिन योगाभ्यास

Daily Yoga Practice

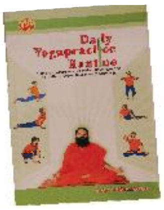

Daily Yoga Practice

It describes the daily Yoga exercises told by Swami Ramdev Ji Maharaj. It presents the order of exercise with pictures very nicely.

गृहस्थ योगसाधक के गुण

(गृहस्थ योगसाधक के लिए आवश्यक ३५ गुणों का विशद विवरण)

प्राचीन काल से इस विषय पर चिंतन किया जाता रहा है कि योग को अपनाने वाले गृहस्थ में कौन-कौन से गुण होने चाहिये, जिनसे वह योग-साधना के मार्ग में सफलता प्राप्त कर सके। आचार्य हेमचंद्र नें स्वरचित 'योगशास्त्र' में योगसाधक गृहस्थ के लिये आवश्यक 35 गुणों का वर्णन किया है। इन्हें ही यहां सरल हिन्दी भाषा के साथ प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक योग साधकों के लिये अवश्य ही पठनीय है।

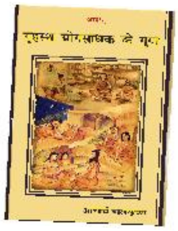

गृहस्थ योगसाधक के गुण

योग-साधना एवं योग-चिकित्सा रहस्य

(अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, नेपाली, उर्दू, अंग्रेजी, आसामी, बंगाली, मलयालम, मराठी,कन्नड,उडिया,गुजराती,तेलुगू,तमिल)

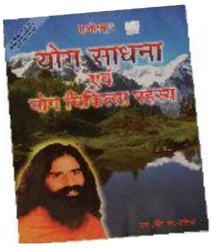

योग-साधना एवं योग-चिकित्सा रहस्य

इस पुस्तक में महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग का सुन्दर विवेचन किया गया है। इसमें अंत:करण शुद्धि एवं आत्मसाक्षात्कार के मार्ग का वर्णन किया गया है, साथ ही मधुमेह, मोटापा, गैस, कब्ज, अम्लपित्त आदि उदर रोगों एवं अन्य कमरदर्द, माईग्रैन आदि जटिल रोगों की यौगिक चिकित्सा का वर्णन किया गया है।

Yoga its Philosophy and Practice

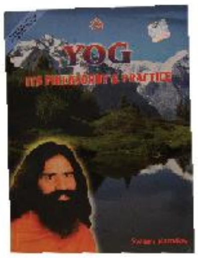

Yoga its Philosophy and Practice

Astang Yoga predicated by Maharshi Patanjali is beautifully interpreted in this book. It describes the conscience purification and ways of self-realization along with Yogic treatment of diabetes, obesity, gastritis, constipation, hyperacidity, etc. abdominal diseases and backache, migraine, etc. complicated diseases.

Research Publications

Patanjali Yogpeeth by predicating scope of Yoga and Ayurveda on scientific background has given birth to a revolution. It becomes necessary to know the utility of conventional methods and mention all findings scientifically along with standard research methods. For this a research book was written that comprises of all research works carried by Patanjali Research Institute on Yoga from September 2007 to June 2015

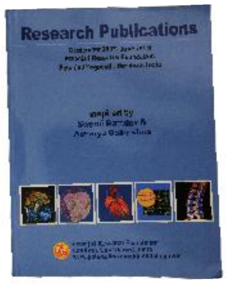

Research Publications

Science Studies Pranayam

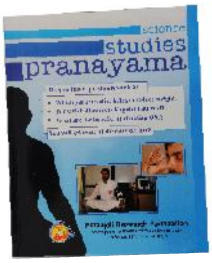

Science Studies Pranayam

This book describes the scientifically tested healthy and miraculous effects of Pranayam. The desirable results of investigations carried out for a long time on various patients are really shocking and increase devotion towards Pranayam.

पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित स्वाध्यायोपयोगी विशिष्ट ग्रन्थ

चार वेद

चार वेद

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान के मूल आधार वेद हैं। विदेशी विद्वान् भी वेदों को ही विश्व का सबसे प्राचीन साहित्य मानते हैं। वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद- इन चारों वेदों में जीवनोपयोगी सभी प्रकार के ज्ञान का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। पतंजलि योगपीठ ने इन चारों वेदों का मूल रूप में शुद्ध प्रकाशन किया है।

हृदयोद्गार

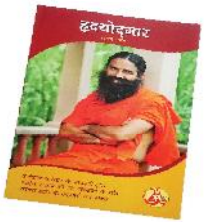

हृदयोद्गार

पतंजलि परिवार के सदस्यों द्वारा श्रद्धेय स्वामी जी एवं संस्थान के प्रति व्यक्त हृदय के उद्गारों का संग्रह।

श्रीमद्भगवद्गीता-गीतामृत
(विस्तृत हिन्दी व्याख्या एवं शब्दार्थ सहित)

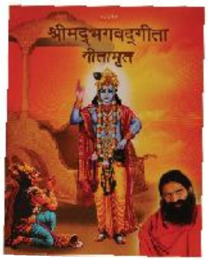

श्रीमद्भगवद्गीता

इसमें गीता की विस्तृत एवं सरल व्याख्या दी गयी है, जिसे साधारण व्यक्ति भी समझ सकते हैं। गीता में प्रतिपादित सांख्ययोग, कर्मयोग आदि का बहुत ही उत्तम एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ उत्तम विवरण दिया गया है, साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में उसका संदेश संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है और वर्तमान काल में व्यक्ति के लिये उसकी प्रासांगिकता का विवेचन किया गया है।

चाणक्य-सूत्र
(आचार्य चाणक्य द्वारा रचित राजनीति विषयक सूत्र, हिन्दी अनुवाद सहित)

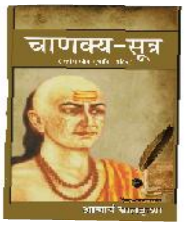

चाणक्य-सूत्र

इसमें कौटलीय अर्थशास्त्र के साथ उपलब्ध चाणक्य-सूत्रों का अर्थ सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र में उपलब्ध प्रेरणाप्रद सुभाषित वचनों का भी हिन्दी अनुवाद के साथ संकलन किया गया है। इनसे प्राचीन भारतीय राजनीतिक आदर्श एवं शासक के उच्च चरित्र की झलक मिलती है।

जीवन-दर्शन
(हिन्दी, अंग्रेजी,आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,कन्नड,उडिया, तमिल,गुजराती,तेलुगू)

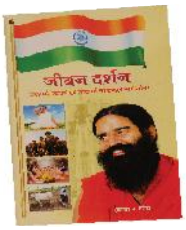

जीवन-दर्शन

इसमें श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी महाराज के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया गया है, जिसके अन्तर्गत योगधर्म, स्वधर्म एवं राष्ट्रधर्म का सम्पूर्ण मार्गदर्शन किया गया है।

Jivan Darshan

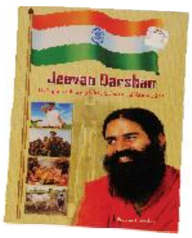

Jivan Darshan

It presented the biography of Shredhy Swami Ramdev Ji Maharaj which gives complete guidance of Yoga-righteousness, self- righteousness and nation- righteousness.

साधना काल एवं व्यवहार काल का योग (स्वामी रामदेव)

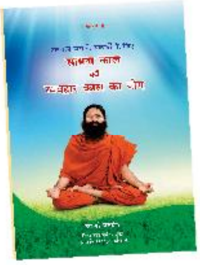

व्यवहार काल का योग

इस लघु पुस्तिका में योगसाधना के आध्यात्मिक पक्ष के साथ व्यावहारिक पक्ष को विशेष रूप से उभार कर प्रस्तुत किया गया है। योगसाधक अपने तन-मन को स्वस्थ, निर्मल व प्रसन्न रखते हुए परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति कैसे उचित रूप से अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकता है, इसका उत्तम विवेचन किया गया है।

जीवन का समाधान (आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज)

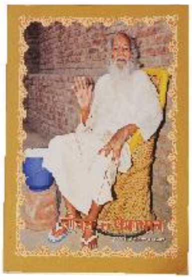

जीवन का समाधान

यह पुस्तक आधुनिक युग के महान् वीतराग कर्मयोगी संत स्वामी सोमानन्द जी महाराज, नूरगढ आश्रम गुडगांव (गुरुग्राम) के संस्मरण एवं शिक्षाओं से सम्बद्ध है। पूज्य गुरुजी आचार्य श्री प्रद्युम्न जी महाराज ने स्वामी जी के दीर्घकालीन सत्संग से उनके जीवन दर्शन को समझा एवं उनके सान्निध्य से जो आध्यात्मिक अनुभूतियां एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया, उसका बहुत ही रोचक एवं मार्मिक विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। अध्यात्म मार्ग के पथिक को तो यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिये।

साधना-पथ (आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज)

साधना-पथ

आचार्य श्री प्रद्युम्न जी महाराज द्वारा रचित इस पुस्तक के स्वाध्याय से साधना के पथ पर अग्रसर पथिक साधकों के ज्ञान की अभिवृद्धि होगी तथा जो साधक पूरी ईमानदारी, दृढ-संकल्प व अखण्ड पुरुषार्थ के साथ अपने भीतर की दुर्बलताओं, पराधीनताओं से सर्वथा मुक्त होकर जीवन के अंतिम गंतव्य तक पहुँचना चाहते हैं, उनका जीवन निरन्तर उन्नत, परिष्कृत व दिव्य होगा।

साधक-पाथेय (आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज)

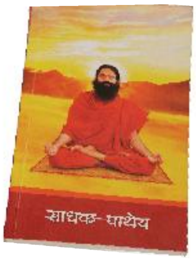

साधक-पाथेय

साधक पाथेय प्रस्तुत पुस्तक में श्रद्धेय आचार्य जी ने मन, वचन एवं कर्म को निर्मल तथा राग-द्वेष रहित कर शान्तावस्था पाने के अमोघ उपाय बताये हैं। अन्तःकरण को तामसी एवं राजसी प्रवृत्तियों से रहित कर सात्त्विक बनाने के उपाय सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं। विषयजन्य सुख की परिणाम-विरसता को स्पष्ट करते हुए सच्चे आध्यात्मिक सुख की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा दी है। राग और द्वेष से उत्पन्न होने वाले दुःख की चोटों के प्रति संवेदनशील बनने के लिये प्रेरित किया है। कामना अथवा तृष्णा ही दुःख का सबसे बड़ा कारण है, इस बात पर विशेष बल दिया है।

भक्ति-गीतांजलि

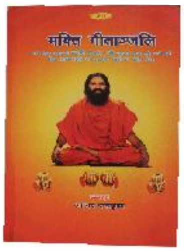

भक्ति-गीतांजलि

यह श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा प्राय: गाये जाने वाले महत्त्वपूर्ण भजनों एवं देशभक्ति गीतों का संग्रह है। इसमें सामूहिक सत्संग एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिये उपयोगी भावपूर्ण गीतों का संकलन है। यह पुस्तक हिन्दी भाषा में संकलित और संपादित की है।
प्रकाशन वर्ष- 2006 ई.

भारत के आदर्श व्यक्तित्व

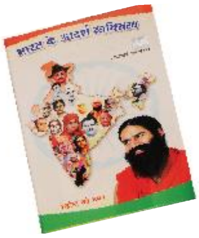

भारत के आदर्श व्यक्तित्व

इस पुस्तक में 50 जाने-माने व्यक्तित्व, आध्यात्मिक सन्तों, स्वतंत्रता-सेनानियों और भारत के क्रान्तिकारियों की प्रामाणिक संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की गई है। प्रकाशन वर्ष- 2009 ई.

विचार क्रांति

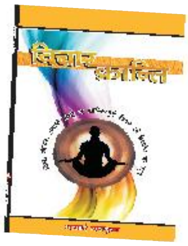

विचार क्रांति

यह पुस्तक 2013 ई. में नेपाली भाषा में प्रकाशित की गयी थी। इसमे जीवन, समाज, देश और दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु सूत्र शामिल हैं।

वैदिक नित्य कर्म विधि

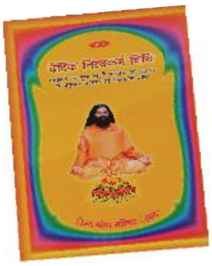

वैदिक नित्य कर्म विधि

वैदिक हिन्दू परम्परा में वर्णित दैनिक प्रार्थना, हवन, परिशोधक अनुष्ठानों की विधि और यज्ञविधि का वर्णन करने वाली यह पुस्तक 2010 ई. में आचार्य बालकृष्ण द्वारा संकलित और सम्पादित की है।

वैदिक वीर गर्जना

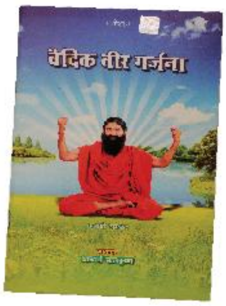

वैदिक वीर गर्जना

इस पुस्तक में प्रेरणादायक और ओजस्वी वैदिक मंत्रों का संकलन किया गया है, जिनके अध्ययन से निराश व्यक्ति भी उत्साह से भरकर कर्तव्य मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। 2010 ई. सम्पादित पुस्तक स्वाध्यायशील पाठकों के लिये बहुत ही उपयोगी है।

संत दर्शन

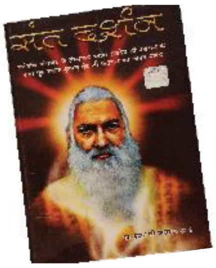

संत दर्शन

संत दर्शन में कृपालु बाग आश्रम के संस्थापक स्वामी कृपालु देव महाराज जी का जीवन चरित्र है। इन्ही के शिष्य स्वामी शंकरदेव जी थे, जिनसे स्वामी रामदेव जी महाराज ने संन्यासदीक्षा ली थी। कृपालुबाग आश्रम ही विश्व प्रसिद्ध दिव्ययोग मन्दिर ट्रस्ट का मुख्य कार्यालय है। प्रकाशन वर्ष- 2006 ई.

आयुर्वेद के जड़ी-बूटी अनुसंधान क्षेत्र में विशाल ग्रन्थ, जो द्रुत गति से पूर्णता की ओर अग्रसर हैं

विश्व भेषज संहिता
(World Herbal Encyclopedia)

[सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों में प्रयुक्त होने वाले औषधीय पौधों का वर्णन करने वाला एक बृहद् (multi-voluminous) ग्रन्थ।]

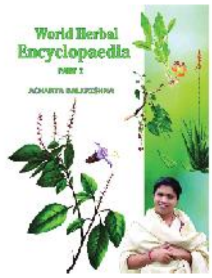

विश्व भेषज संहिता

सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित जड़ी-बूटी आश्रित चिकित्सा पद्धतियों में प्रयुक्त होने वाली वनस्पतियों को चिकित्सकीय प्रयोगों के साथ विस्तृत एवं प्रामाणिक विवरण सहित एक स्थान पर संग्रहित करने का प्रथम प्रयास है- 'विश्व भेषज संहिता'।

इस ग्रन्थ में उन परम्परागत रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सार्थ प्रयुक्त की जाने वाली जड़ी-बूटियों का वर्णन भी है जो अब तक कहीं लिपिबद्ध नही था। यह अद्वितीय पुस्तक प्राचीन काल से लेकर आज तक होने वाले गम्भीर रोगों के लिए सामान्य एवं विशिष्ट उपचार पद्धति को दर्शाती है।

यह विश्व कोश अपने आप में एक संहिता है। इसमें लगभग 60,000 (साठ हजार) जड़ी-बूटियों के विश्व की लगभग 225 (दो सौ पच्चीस) भाषाओं में उपलब्ध 3 लाख से अधिक नामों व पर्यायवाची (Synonyms) नामों के विवरण के साथ-साथ कुल व वंश नामोत्पत्ति (Origin of Family & Genus Name), नये संस्कृत नामों व संस्कृतनामोत्पत्ति (निर्वचन- Origin of Sanskrit Name) का भी वर्णन किया गया है। वानस्पतिक नामों (Botanical Names) के अनुसार

कुल (Family) एवं वंश (Genus) व जाति (Species) का भी संस्कृत भाषा में नामकरण करके, संस्कृत भाषानुसार विश्व की सम्पूर्ण जड़ी-बूटियों व वनस्पतियों का विश्व में प्रथम बार संस्कृत भाषा पर आधारित वैज्ञानिकतापूर्ण नये वानस्पतिक नामकरण किये गये हैं। विश्व में प्रचलित सभी भाषाओं के नामों के साथ आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित लगभग 900 (नौ सौ) पौधों के 13500 (तेरह हजार पाँच सौ) से अधिक नामों को भी गहन अन्वेषण के पश्चात् वर्णित किया गया है। इनके आधार पर पौधों की पहचान व उसके स्वरूप व गुणों को भी समझने में सुविधा होगी, साथ में सम्पूर्ण वनस्पतियों का परिचय (Introduction), बाह्यस्वरूप (Morphology) आदि का जड़ी-बूटियों की पहचान के सन्दर्भ में विश्वस्तरीय व प्रामाणिकता के साथ वर्णन किया गया है। रासायनिक संघटन (Chemical Composition) व औषधीय गुण-कर्म (Medicinal properties) व प्रयोगों (Uses) को विश्व में प्रचलित सभी प्राचीन विधियों के साथ-साथ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान सम्मत सभी अनुसंधानों को भी सम्मिलित करने का प्रयास किया है। यह पुस्तक विश्व की पारम्परिक औषधीय प्रणालियों के इतिहास और आधुनिक युग की पारम्परिक चिकित्सा में उनकी स्थिति को भी बहुत गहनता व प्रामाणिकता के साथ प्रदर्शित करती है।

यह पुस्तक साक्ष्य अनुसंधान (Evidence-based Research) पर आधारित है और इसमें जड़ी-बूटियों के आधुनिक उपयोगों के साथ पारम्परिक प्रयोगों का एक अनूठा मेल है। यह पुस्तक आर्वाचीन और सही वानस्पतिक नाम, स्थानीय नाम, संस्कृत नाम के साथ-साथ, उनके सम्बन्ध में औषधीय पौधों की पहचान में विश्वस्तरीय प्रामाणिकता को प्रदर्शित करती है। जड़ी-बूटियों पर आधारित यह पहली पुस्तक है, जिसमें पादप जगत के सभी वर्गों में {शैवाल (Algae), कवक(-Fungi), लाइकेन (Lichen), ब्रायोफाइट्स (Bryophytes), टेरिडोफाइट (Pteridophytes), अनावृतबीजी (Gymnosperms) तथा आवृतबीजी (Angiosperms)} उपलब्ध औषधीय पौधों का वर्णन किया गया है।

इसमें लगभग 15,000 जीवन्त चित्र (Canvas painting) शामिल है, जो कि एक अविश्वनीय प्रयास है। इस पुस्तक में पौधों के अनेक चित्रों और रेखाचित्रों का वर्णन किया गया है जो पौधों की सरंचना को स्पष्टतया प्रदर्शित करते हैं। शीघ्र ही इस विश्वभेषज संहिता का बेव पोर्टल भी आरम्भ किया जायेगा।

इस प्रकार इस ग्रन्थ में विश्व भर में फैला हुआ जड़ी-बूटियों का वह प्राचीन ज्ञान जो दुनिया के विभिन्न समूहों, जनजातियों व वनवासियों में परम्पराओं के रूप में प्रचलित है, प्रकाशित या अप्रकाशित विविध पाण्डुलिपियों, प्राचीन व आधुनिक साहित्य तथा इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस व अन्य स्रोतों के रूप में उपलब्ध है, उन सभी विधाओं व ज्ञान को इसमें समावेश करने का प्रयास किया है। इसमें सामान्य रोगों से लेकर अनेक असाध्य व गम्भीर रोगों की अमोघ एवं सटीक चिकित्सा विधि बताई गयी है। जड़ी-बूटी की पहचान व उसके ज्ञान को प्रमाणिकता व सरलतया व्यवस्थित रूप में एक स्थान पर उपलब्ध कराने वाला विश्व का सर्वाधिक विस्तृत व प्रामाणिक ग्रन्थ है। निःसन्देह यह 'विश्व भेषज संहिता' सम्पूर्ण विश्व के चिकित्सकों, जड़ी-बूटी वैज्ञानिकों, शोधार्थियों (Research scholar), विद्यार्थियों सहित जड़ी-बूटियों के उपयोग के विषय में जिज्ञासा रखने वाले सुधीजनों की ज्ञान वृद्धि में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

World Herbal Encyclopaedia

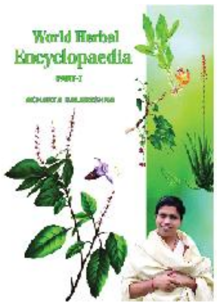

World Herbal Encyclopaedia

(A multi-voluminous exhaustive collection of medicinal plants used in different traditional medicinal systems across the globe)

The "World Herbal Encyclopedia" is a unique endeavour to gather the scattered knowledge of all medicinal plants and their widespread usages at one place. The work has been compiled and authentically arranged, based on extensive research and data collection from various electronic resources, databases, published, unpublished, hand written and rare manuscripts and books available till date. For the first time, this book displays, in the most suitable and systematized manner the in-depth knowledge of medicinal plants which were verbally practiced among the various folkloric and traditional treatment systems of the world. The book unfolds almost all known unknown medicinal plants of the world which were earlier unavailable in any text at one place and can be scientifically explored for var-

ious illnesses in the future. These plants have been explained elaborately from the point of view of traditional uses and their classical illustrations to modern scientific experiments. This unique work brings forth the productive and appropriate treatment methodology for simple to severe diseases known from antiquity till date.

This Encyclopedia is the one and the only book of its own kind. This book depicts 3,00,000 (three hundred thousand) vernacular names and numerous synonymous names (nearly 2,50,000) of about 60,000 medicinal plants of the world in more than 250 languages spoken across the globe. Besides, all the common names of the plants known in different regions of the world and more than 15,000 Sanskrit names of 900 medicinal plants found in ancient Ayurvedic published texts and unpublished manuscripts are also compiled here. Most interestingly, it is the first treatise where around 60,000 medicinal plants of the world are given entirely new Sanskrit nomenclature (in binomial pattern) from family up to genus and species level, describing the base of origin of nomenclature in scientific terms. The book also describes about the origin of names of different families and genus. Along with, the book includes external features (morphology) of the plants, experimental pharmacological studies, chemical constitutions, medicinal properties of plants, toxicological effect and various medicinal uses in different medicine systems, traditional medicines as well as in folk medicines which are popular across the world along with the modern researches in the respective areas. Consequently, it will be easy to identify any plant as well as to know about its appearance and properties. It is a unique blend of traditional herbalism with evidence-based research and modern uses. It contains world class authenticity in the identification of medicinal plants in regard with their recent and correct botanical names, local names, ancient Sanskrit names, etc. This is a first

book on medical herbalism that describes all groups of plant kingdom including medicinal, fresh water, sea plants (algae), fungi, lichens, bryophytes, pteridophytes, gymnosperms and angiosperms.

It contains approximately 25,000 live paintings (canvas paintings) and 35,000 line diagrams of medicinal plants, which is an incredible attempt as there are very few herbal works which depict paintings of plants as a key to identification. Photographs and line diagrams have been provided which presents a clear exhibition of these plants. The book evidently contains the history of traditional medicinal systems of the world and their status in traditional medicine in the present era. A web-portal of this encyclopaedic work is also going to be launched shortly.

Hence, it is a book which extraordinarily unfurls the knowledge of medicinal plants and their uses, and contain remedies from simple to complex diseases which are traditionally well-known and practiced by the mankind in the cross verticals of the globe. Virtually this Encyclopaedia being the most descriptive and genuine works on medicinal plants of the world. The book contains a good source of information for all readers on the global ground. This work will enhance the knowledge of students, researchers and scholars from various fields who are curious to study medicinal plants and their uses. It will be beneficial for botanists, taxonomists, scientists, doctors, traditional medicine practitioners, traditional pharmacists, herbal industries and for all the communities of the society interested in the subject. It will be equally beneficial for pharmaceutical industry as now a days demand for green pharmacy is increasing day by day. The book will open new grounds for modern research on the unexplored medicinal plants; as till date there is no such book which covers almost all medicinal plants available on the earth.

विश्व वानस्पतिक कुल, प्लान्ट फैमिलीज. ऑफ द वर्ल्ड

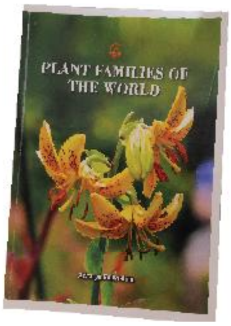

विश्व वानस्पतिक कुल

आधुनिक वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ, समय-समय पर वानस्पतिक वर्गीकरण में काफी बदलाव आये हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य, वर्गीकरण की आधुनिक जातिवृत्तीय प्रणाली के अनुसार ब्रायोफाइट, टेरिडोफाइट, जिम्नोस्पर्म एवं एन्जियोस्पर्म के सभी कुलों का संक्षिप्त विवरण देना है। यह पुस्तक दो संस्करणों में प्रकाशित की जाएगी जो कि हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में उपलब्ध होगें। संस्करण-प्रथम, विश्व के एन्जियोस्पर्म कुलों के बारे में विस्तृत जानकारी देगा तथा संस्करण-द्वितीय, ब्रायोफाइट, टेरिडोफाइट एवं जिम्नोस्पर्म कुलों के बारे में जानकारी देगा। इस पुस्तक की बड़ी विशेषता यह है कि वानस्पतिक कुलों, वशों तथा प्रजातियों के संस्कृत नाम और उनकी आकृतिक विशेषताएं पहली बार एक ही स्थान पर संग्रहित हैं। यह पुस्तक पौधों के विकास के लिए अनुकूल क्षेत्र, कुलों के संस्कृत नाम, कुलों के नाम की संस्कृत व्युत्पत्ति, भौगोलिक विवरण, वानस्पतिक विवरण, वर्गीकरण और आर्थिक उपयोगिता से सम्बन्धित जानकारी समाहित किये हुए है। कुलों के महत्त्वपूर्ण पौधों के विस्तृत विवरण के लिए हस्त चित्र एवं रेखाचित्र भी शामिल किए गये हैं

Plant Families of the World

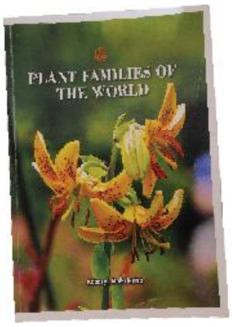

Plant Families of the World

With the modern scientific development, from time to time many changes have occurred in plant classification. The purpose of this book is to provide a concise account of all the families of Bryophytes, Pteridophytes, Gymnosperms and Angiosperms according to modern phylogenetic system of classification. This book will be published in two parts and will be available both in Hindi and English languages. Volume I will concisely provide information of Angiospermic families of the World and Volume II will provide information of the families of Bryophytes, Pteridophytes and Gymnosperms. One of the most important features of this book is that the Sanskrit names of the family, genus, species and their morphological charac-

ters are described for the first time in a single text. This book will cover all the information including the habitat in which the plant grows, Sanskrit name of family, Sanskrit etymology of family name, geographical distribution, botanical hand description, classification and significant economic importance. Canvas paintings and line diagrams will give full detail of important plants of the families.

वानस्पतिक शब्दावली संग्रह (ए गाइड टू बॉटनिकल डिस्क्रिप्शन)

वानस्पतिक शब्द व्युत्पत्ति कोष

यह पुस्तक उन सभी वानस्पतिक पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करती है, जो कि वनस्पतियों के आकृतिक निरूपण काम में आते हैं। यह पुस्तक वानस्पतिक वर्गीकरण, आकृतिक निरूपण, कुलों,वंशो तथा प्रजातियों के नामकरण में काम आने वाले सभी पारिभाषिक शब्दों का एक वानस्पतिक शब्दकोश भी उपलब्ध कराती है। इसके अतिरिक्त इसमें कुलों, वंशो तथा प्रजातियों के नामों का विवरण और उनकी व्युत्पत्ति समावेश भी रहेगा। यह पुस्तक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में प्रकाशित की जाएगी। यह पुस्तक वनस्पतियों, वर्गीकरण-शास्त्रियों, अनुसंधानकर्त्ताओं और विद्यार्थियों के लिए निश्चित ही उपयोगी जानकारी उपलब्ध कराएगी।

A Guide to Botanical Description

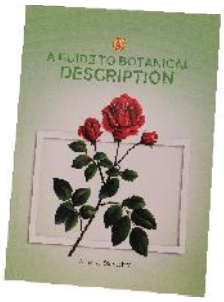

A Guide to Botanical Description

This book will provide a concise account of description of all botanical terms which are used in morphological characterization of plants. The book will also give the botanical glossary of complete terminology used in botanical classification, morphological characters, family, genus and species nomenclature. Besides, the book will contain description and etymology of family names, genus and species names. The book will be published in both Hindi and English languages. This book will surely provide beneficial information for the botanists, taxonomists, researchers and students.

योग विश्वकोष (वर्ल्ड योग एनसाइक्लोपीडिया)

योग विश्वकोश में विभिन्न पारम्परिक योग (पातंजल योग, हठ योग, बौद्ध योग, जैन योग, सिद्ध योग) की जानकारी दी गई है। इसमें विविध परम्पराओं, उनके सिद्धान्तों, अभ्यासों और नियमों से सम्बन्धित हजारों शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। लगभग 2500 आसनों, 100 से अधिक प्राणायामों एवं शोधन क्रियाओं, 2500 से अधिक मुद्राओं, योग के उपकरणों एवं सामग्रियों एवं परम्परागत योग के पदार्थों का 10 हजार से अधिक शब्दों में सचित्र निरूपण है।

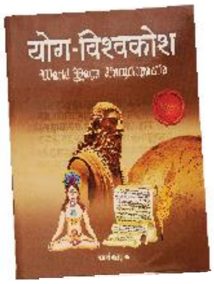

योग विश्वकोष

World Yoga Encyclopedia

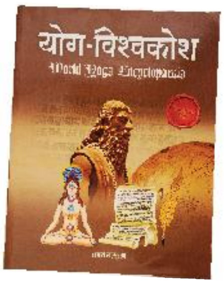

World Yoga Encyclopedia

In 'World Yoga Encyclopedia', diverse traditions of Yoga (namely - Patanjalyoga, Hathyoga, Buddhayoga, Jainyoga, Siddhyoga), its principles and various meanings, definitions and methods of thousands of words related to their theories and practices are authentically compiled from several treatises by various sages with the context and references. More than 10,000 words consisting of about 2,500 postures (Asanas), more than 100 breathing techniques (Pranayama) and refinement activities, more than 250 postures (mudras), yogic tools, materials, classical Yoga substances are described and illustrated precisely.

सौमित्रेय-औषधिकोष

(आयुर्वेद साहित्य में वर्णित 900 पौधों के लगभग 15000 संस्कृत नाम, निर्वचन, ग्रन्थसंदर्भ, वर्ग तथा गण का विस्तृत विवरण करने वाला ग्रन्थ)

इस पुस्तक में प्रथम बार 900 औषधीय पौधों के सम्पूर्ण आयुर्वेदीय साहित्य (यथा निघण्टु, संहिता आदि) तथा वेदों व संस्कृत साहित्य में उपलब्ध लगभग 15000 संस्कृत पर्यायों का संकलन किया गया है और इनका निर्वचन भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में औषधीय पौधों के वर्गों तथा गणों का संकलन भी किया गया है।

सौमित्रेय औषधिकोष

वेदों में वर्णित औषधीय पादप

वेदा मे परमं चक्षु वेदा मे परमं ज्ञानम् वेद के सम्बन्ध में महर्षि व्यास का यह कथन सर्वमान्य है। मानव सभ्यता, संस्कृति, धर्म व ज्ञानोदय के आदि स्रोत वेद ही हैं। वैदिक आयुर्विद्या का मूल वनस्पतियां हैं। वेदनाध्ययन से दृष्टिगोचर होता है कि वेद में अनेक वनस्पतियों के नाम, उनके गुण व औषधीय प्रयोगों का उल्लेख है। इस ग्रन्थ में वेद वर्णित वानस्पतिक पदों का वेदभाष्यकारों व वैदिक कोशों आदि के आधार पर सम्यक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जिससे उनका आधुनिक प्रचलित स्वरूप प्रकट होगा।

वेदों में वर्णित औषधीय पादप

पतंजलि योगपीठ की मासिक पत्रिका- योग संदेश

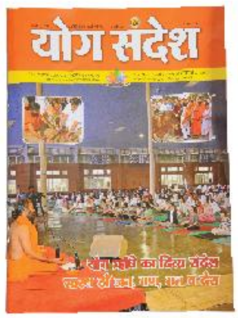

योग संदेश

योग संदेश पतंजलि योगपीठ के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने वाली लोकप्रिय मासिक पत्रिका है। यह योग, अध्यात्म, आयुर्वेद, संस्कृति एवं संस्कार की संवाहिका है। परम पूज्य स्वामी जी एवं श्रद्धेय आचार्य जी के अग्रलेखों के साथ इसमें शोधात्मक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये जाते हैं। राष्ट्रीयता एवं स्वदेशी के आंदोलन को बल देने का यह एक सशक्त माध्यम है। हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बांग्ला, पंजाबी, उडिया, असमिया, तेलगु, कन्नड, तमिल एवं नेपाली- इन 12 भाषाओं में सुंदर सज्जा एवं रंगीन चित्रों के साथ प्रकाशित होने वाली यह पतंजलि योगपीठ के मिशन से जुडे लाखों पाठकों की प्रिय पत्रिका है। यह प्रतिमास उत्तम पठनीय सामग्री उपलब्ध कराने के साथ योगपीठ के कार्यक्रमों से जनता को जोड़ते हुए राष्ट्रोत्थान के अभियान में अपूर्व योगदान कर रही है।

भारत स्वाभिमान का मासिक पत्र- स्वदेश स्वाभिमान

स्वाभिमान संकल्प-पत्र

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के निर्देशन एवं नेतृत्व में 'भारत स्वाभिमान न्यास' का संगठन सम्पूर्ण देश में फैला हुआ है। इसकी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी हेतु 'स्वदेश स्वाभिमान' नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया जाता है, जो बडे आकार के ८ पृष्ठों का होता है। इसमें सामयिक गतिविधियों के समचारों के साथ ज्वलंत राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार पूर्ण एवं गम्भीर लेख भी प्रकाशित किये जाते हैं।

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज एवं भारत स्वाभिमान के प्रांतीय संगठनों के नवीनतम कार्यक्रमों का विवरण भी इसमें प्रकाशित किया जाता है।

स्वाभिमान संकल्प पत्र

भारत स्वाभिमान न्यास द्वारा 'हमारे सपनों का भारत' इस विषय पर ९२ पृष्ठ का 'संकल्प पत्र' प्रकाशित किया है, जो युवा भारत, किसान पंचायत, पतंजलि योग समिति, महिला पतंजलि योग समिति की ओर से सम्मिलित रूप से श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया है। इसमें कालाधन लाने तथा भृष्टाचार मिटाने के विषय में नीति स्पष्ट की गयी है। गरीबी, बेरोजगारी एवं मंहगाई दूर करने के उपाय बताए गए हैं। आदर्श ग्राम निर्माण योजना, स्वदेशी तकनीक से विषमुक्त कृषि आदि की अवधारणा स्पष्ट की गई है। इसमें वर्णित नीतियों द्वारा भारत को पुन: विश्व की महाशक्ति बनाने का संकल्प दोहराया।

ज्ञानामृत

परम पूज्य स्वामी रामदेवजी महाराज द्वारा जिन योगदर्शन, गीतासार,नीति श्लोकों तथा वेदोपनिषद् आदि मन्त्रों का प्राय: उच्चारण व उपदेश किया जाता है, उनका संग्रह इस पुस्तक में किया गया है

पतंजलि योगपीठ द्वारा प्रचारित आडियो-वीडियो/ दृश्य-श्रव्य सामग्री

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज द्वारा रोग निवारण हेतु आयोजित शिविरों में आसन, प्राणायाम एवं जडी-बूटियों द्वारा सरल घरेलु उपचार बताया जाता रहा है। विशेष रोगों के निवारण हेतु आसन, प्राणायम, पथ्याहार एवं विशेष जडी-बूटियों के सेवन की जानकारी दी जाती रही है इसके लिये वी.सी.डी. एवं डी.वी.डी. तैयार की गयी हैं। इनकी सूची इस प्रकार है।

ऑडियो कैसेट (Audio cassettes)

नाम	मूल्य
दिव्य स्तवन (हिन्दी)	49.0
गायत्री मन्त्र (हिन्दी)	30.0
वैदिक सन्ध्या (हिन्दी)	30.0
योग-निद्रा (हिन्दी)	30.0
भक्तिगीतांजलि भाग-1 (हिन्दी)	35.0

भक्तिगीतांजलि भाग-2 (हिन्दी)	35.0
भक्तिगीतांजलि भाग-3 (हिन्दी)	35.0
भक्तिगीतांजलि भाग-4 (हिन्दी)	35.0
भक्तिगीतांजलि भाग-5 (हिन्दी)	35.0
राष्ट्रवन्दना भाग-1 (हिन्दी)	35.0
राष्ट्रवन्दना भाग-2 (हिन्दी)	35.0

ऑडियो सीडी (Audio CD)

नाम	मूल्य
भक्तिगीतांजलि भाग-1 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-2 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-3 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-4 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-5 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-6 (हिन्दी)	39.0
भक्तिगीतांजलि भाग-7 (हिन्दी)	39.0
राष्ट्रवन्दना भाग-1 (हिन्दी)	39.0
राष्ट्रवन्दना भाग-2 (हिन्दी)	39.0

एम. पी. थ्री (MP3)

नाम	मूल्य
भारत स्वाभिमान शंखनाद [२० एम. पी. थ्री का पैक](हिन्दी)	300.0
भक्तिगीतांजलि भाग-1 (हिन्दी)	49.0
भक्तिगीतांजलि भाग-2 (हिन्दी)	49.0
ध्यानयोग / सक्रिया ध्यान (हिन्दी/ अंग्रेजीं)	49.0
दिव्य स्तवन (हिन्दी)	49.0
गायत्री मन्त्र (हिन्दी) &	
महामृत्युंजय मन्त्र (हिन्दी)	49.0
राष्ट्रवन्दना (हिन्दी)	49.0
योग-निद्रा (हिन्दी/अंग्रेजीं)	49.0

वीडियो सीडी (Vedio CD)

नाम	मूल्य
अष्टांगयोग (हिन्दी)	60.0
अस्थमा के लिये योग (हिन्दी)	60.0
आत्मबोध (हिन्दी)	60.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (अग्निशिखा) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (अनार) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (आमला) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (कचनार) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (गाजर) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (गेंदा) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (घृतकुमारी) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (जामुन, गूलर) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (तेजपत्र) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (दारुहलदी) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (धतूरा) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (बबूल) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (रुद्रवंती) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (रेवंदचीनी) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (लौकी) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (सदाबहार, गुलाब) (हिन्दी)	49.0
आयुर्वेद जडी-बूटी का खजाना (सरसों) (हिन्दी)	49.0
उच्चरक्तचाप के लिये योग (हिन्दी)	60.0
उदररोगों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
कब्ज एवं बबासीर के लिये योग (हिन्दी)	60.0
करें योग रहें निरोग (भाग-1) (हिन्दी)	199.0
करें योग रहें निरोग (भाग-2) (हिन्दी)	199.0
करें योग रहें निरोग (भाग-3) (हिन्दी)	199.0
करें योग रहें निरोग (भाग-4) (हिन्दी)	199.0
करें योग रहें निरोग (भाग-5) (हिन्दी)	199.0
किडनी के लिये योग (हिन्दी)	60.0
कैंसर के लिये योग (हिन्दी)	60.0
गर्भवती महिला के लिये योग भाग 1-2 (हिन्दी)	79.0
चर्म रोग के लिये योग (हिन्दी)	60.0

ध्यान योग / सक्रिय ध्यान (हिन्दी)	79.0
नि:संतान दम्पतियों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
नेत्र रोगों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
पार्किंसन के लिये योग (हिन्दी)	60.0
पीलिया तथा हेपाटाइटिस के लिये योग	60.0
बच्चों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
मधुमेह के लिये योग (हिन्दी)	60.0
मस्कुलर डिस्ट्रोफी के लिये योग (हिन्दी)	60.0
माइग्रैन तथा मिर्गी के लिये योग (हिन्दी)	60.0
मेरुदण्ड के लिये योग (हिन्दी)	60.0
मोटापे के लिये योग (हिन्दी)	60.0
युवतियों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
युवाओं के लिये योग (हिन्दी)	60.0
योग विज्ञान [४४ VCD का पैक](हिन्दी)	1100.0
योगानिद्रा (हिन्दी)	60.0
योगाभ्यास एवं जीवन शैली	60.0
राष्ट्रधर्म (हिन्दी)	60.0
वातरोगों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
विविध रोगों के लिये योग (हिन्दी)	60.0
शरीर सौष्ठव के लिये योग (हिन्दी)	60.0
सफेद दाग के लिये योग (हिन्दी)	60.0
साप्ताहिक योगचर्या (हिन्दी)	199.0
सोलह संस्कार (हिन्दी)	60.0
हृदयरोग के लिये योग (हिन्दी)	60.0
A Complete Package For The Beginner of All Age (Pranayam & Yoga Aasan) (English)	79.0
Heart Diseases (Bangali)	60.0
Heart Diseases (Tamil, Kannad)	49.0
Yoga for Asthama (Telugu, Tamil)	49.0
Yoga for Children (Bengali, Gujrati, Kannad)	49.0
Yoga for Children (English)	60.0
Yoga for Constipation & Piles (Tamil)	49.0
Yoga for Constipation & Piles (Telugu)	49.0
Yoga for Diabetes (English)	60.0

Yoga for Diabetes (Gujrati)	49.0
Yoga for Diabetes (Marathi, Tamil, Telugu, Bengali)	49.0
Yoga for Diabetes (Malayalam)	49.0
Yoga for Eye Diseases (English, Bangali)	60.0
Yoga for Eye Diseases (Tamil)	49.0
Yoga for Hepatitis / Jaundice (Telugu)	49.0
Yoga for High Blood Pressure (Bangali, Gujrati)	60.0
Yoga for High Blood Pressure (Kannad, Tamil,Telugu)	49.0
Yoga for Muscular Dystrophy (English)	60.0
Yoga for Obesity (Gujrati)	60.0
Yoga for Obesity (Tamil, Malayalam, Marathi, Telugu, Bengali, Kannad)	49.0
Yoga for Parkinson & Paralysis (English)	60.0
Yoga for Pregnant Women Part-1&2 (Bengali, Tamil)	69.0
Yoga for Psoriasis (Skin Diseases)	60.0
Yoga for Various Ailments (English)	60.0
Yoga for Vertebral Column (Spinal Cord) (English, Bengali)	60.0
Yoga for Vertebral Column (Spinal Cord) (Kannad, Tamil)	49.0
Yoga for Youth (English)	60.0
Yoga for Youth (Kannad, Telugu)	49.0
Yoga Mein Bhrantia, Khatre & Savdhaniya	60.0
Yoga Practices & Life Style (Bangali, Gujrati)	49.0
Yoga Practices & Life Style (English)	60.0
Yoga Science (Pranayam & Yog Aasan) (Malayalam, Assamese, Bhojpuri)	69.0
Yoga Science (Pranayam & Yoga Aasan) (Bengali, Gujrati, Kannad, Marathi, Oriya, Punjabi, Tamil, Telugu)	69.0
Yoga Vigyan (Pranayam & Yoga Aasan) (Hindi)	79.0

DVD

Name	Price
A Complete Package for the Beginners of All Age (Pranayam & Yoga Aasan) (English, Bengali, Gujrati, Tamil)	99.0
Yoga for Asthma (Hindi, English)	75.0
Yoga for Cancer (Hindi, English)	75.0
Yoga for Psoriasis (Skin Diseases) (Hindi, English)	75.0
Yoga for Children (Hindi, English)	75.0
Yoga for Meditation (Hindi, English)	75.0
Yoga for Eye Diseses (Hindi, English)	75.0
Yoga for Pregnant Women Part-1 & Part-2 (Hindi, English)	99.0
Yoga for Heart Disease & Physical Elegance (Hindi, English)	99.0
Yoga for High Blood Pressure (Hindi, English)	75.0
Yoga Practices and Life Style (Hindi, English)	75.0
Yoga for Constipation and Piles (Hindi, English)	75.0
Yoga for Renal Diseases (Hindi, English)	75.0
Yoga for Diabetes (Hindi, English, Bengali, Gujrati, Tamil)	75.0
Yoga for Muscular Dystrophy (Hindi, English)	75.0
Yoga for Vertebral Column (Spinal Cord) (Hindi, English)	75.0
Yoga for Migrain & Epilepsy (Hindi, English)	75.0
Yoga Misconception Risks and Precautions, Eight Yogic Practices & Benefits (Hindi, English)	99.0
Motapa and Madhumeh (Hindi, English)	99.0

Yoga for Obesity (English, Bengali, Gujrati, Hindi)	75.0
Yoga for Childless Couple (Hindi, English)	75.0
Yoga for Parkinson & Paralysis (Hindi, English)	75.0
Yoga For Hepatitis / Jaundice (Hindi, English)	75.0
Active Meditation (Hindi, English)	75.0
Yoga for Leucoderma (Hindi, English)	75.0
Compilation of Yoga Sutras of Patanjali by Swami Ramdevji & a Combine Pack for Weekly Yoga Practices (Hindi, English)	299.0
Yoga for Self Realisation & Patriotism (Hindi, English)	99.0
Yoga for Stomach Ailments (Hindi, English)	75.0
Yoga for Musculoskeletal Disorders (Vata Rog) (Hindi, English)	75.0
Yoga for Various Ailments (Hindi, English)	75.0
Yoga for Women (Hindi, English)	75.0
Yoga Somnia / Yog Nidra (Hindi, English)	75.0
Yoga Science (Pranayam / Yoga Aasan) (Hindi, English)	99.0
Yoga for Youth (Hindi, English)	75.0

संस्थान द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्यों की सूची

पुस्तक का नाम	मूल्य	पृष्ठसं.
अजीर्णामृतमञ्जरी (हिन्दी)	99	114
अथर्ववेद संहिता (संस्कृत)	350	599
अष्टवर्ग-रहस्य (हिन्दी)	150	104
अष्टाङ्गहृदयम् (हिन्दी)	800	669
आओ सीखें योग कक्षा- ३ (बंगाली,गुजराती,नेपाली,पंजाबी,तेलुगू)	95	68
आओ सीखें योग कक्षा- ३ (हिन्दी,असमिया,मलयालम,मराठी,उडिया)	65	68
आओ सीखें योग कक्षा- 4 (असमिया,मलयालम,मराठी,उडिया)	70	84
आओ सीखें योग कक्षा- 4 (हिन्दी,बंगाली,गुजराती,नेपाली,पंजाबी,तेलुगू)	111	84
आओ सीखें योग कक्षा- 5 (असमिया,उडिया)	65	88
आओ सीखें योग कक्षा- 5 (हिन्दी,बंगाली,गुजराती,मराठी,नेपाली,पंजाबी,तेलुगू)	107	88
आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य (हिन्दी)	250	300
आयुर्वेद-महोदधि / सुषेण-निघण्टु (हिन्दी)	125	220
आहार-रोचनः (हिन्दी)	200	69
ऋगवेद संहिता (संस्कृत)	550	1042
औषध-दर्शन(उर्दू)	30	
औषध-दर्शन (हिन्दी, आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,कन्नड, उडिया,तमिल,गुजराती,तेलुगू,नेपाली,पंजाबी)	60	162
खेल-खेल में योग (कक्षा- 1 & 2) (बंगाली,आसामी,गुजराती,मलयालम,नेपाली,उडिया, पंजाबी)	55	52
खेल-खेल में योग (कक्षा- 1 & 2) (हिन्दी,मराठी)	75	52
खेल-खेल में सीखें योग (हिन्दी)	200	125
गृहस्थ योगसाधक के गुण (हिन्दी)	40	56
चंद्रनिघण्टु (हिन्दी)	300	384
जड़ी-बूटी रहस्य (भाग-१) (हिन्दी	700	552

जड़ी-बूटी रहस्य (भाग-२)	700	544
जड़ी-बूटी रहस्य (भाग-३) (हिन्दी)	700	554
जीवन-दर्शन(हिन्दी,आसामी,बंगाली,मलयालम,मराठी,		
कन्नड,उडिया,तमिल,गुजराती)	15	122
दिव्य औषधीय, सुगन्धित एवं सौंदर्यकरण पौधे (हिन्दी)	20	62
दैनंदिन योगाभ्यास (नेपाली)	100	80
दैनंदिन योगाभ्यास (हिन्दी)	75	80
प्राणायाम रहस्य		
(बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड, मराठी,नेपाली, उडिया,तेलुगू)	67	124
प्राणायाम रहस्य (मलयालम, पंजाबी,तमिल,उर्दू,)	50	
प्राणायाम रहस्य (हिन्दी- INTERNATIONAL, CHINESE)	180	76
भक्ति-गीतांजलि (हिन्दी)	50	208
भारत के आदर्श व्यक्तित्व (हिन्दी)	50	116
भोजनकुतूहलम् (हिन्दी)	399	432
यजुर्वेद संहिता(हिन्दी)	170	246
योग एवं स्वास्थ्य कक्षा-6 (हिन्दी)	60	76
योगदर्शन (हिन्दी)	50	113
योगरत्न समुच्चयः (हिन्दी)	600	727
योगशतम् (हिन्दी)	100	156
योगशतम् स्पेशल (हिन्दी)	240	156
योगशत-वैद्यवल्लभा (हिन्दी)	400	480
योगशिक्षा का पाठ्यक्रम (हिन्दी)	30	76
योग-संदर्शिका (आसामी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, मलयालम, मराठी, उडिया)	40	96
योग-संदर्शिका (हिन्दी)	50	96
योग-साधना एवं योग-चिकित्सा रहस्य (पंजाबी, मलयालम, उर्दू,)	125	166
योग-साधना एवं योग-चिकित्सा रहस्य (हिन्दी- INTERNATIONAL)	400	140
योग-साधना एवं योग-चिकित्सा रहस्य		
(हिन्दी, मराठी, बंगाली, गुजराती,कन्नड, उडिया, ,तेलुगू,तमिल, नेपाली,)	157	166

रुचिवधू-गल-रत्नमाला (हिन्दी)	110	130
विज्ञान की कसौटी पर योग (हिन्दी)	50	304
वैदिक नित्य कर्म विधि (हिन्दी)	25	91
वैदिक वीर गर्जना	15	64
श्रीमद्भगवद्गीता-गीतामृत (हिन्दी)	183	305
श्रीमद्भगवद्गीता-गीतामृत (हिन्दी)	350	342
संतदर्शन (हिन्दी)	200	768
सामवेद संहिता (संस्कृत)	130	196
सिद्धसार-संहिता (हिन्दी)	400	451
हरमेखला (हिन्दी)	450	615
हृदयोद्गार	30	112
राजनिघण्टु	400	
धन्वतरि निघण्टु	400	
सोढल निघण्टु	400	
मदनपाल निघण्टु	400	
वैद्यप्रसारकम्	500	
A COMPLETE GUIDE FOR STRUCTURAL BODY WORK (TULSI)	200	176
A PRACTICAL APPROACH TO THE SCIENCE OF AYURVEDA	450	338
AAHAR ROCHAN ENGLISH	250	67
AUSHADH DARSHAN (ENGLISH)	60	162
DAILY YOGA PRACTICE ROUTINE (ENGLISH)	100	80
JIVAN DARSHAN (ENGLISH)	18	134
LET US LEARN YOGA CLASS 3 (ENGLISH)	95	68
LET US LEARN YOGA CLASS 4 (ENGLISH)	111	84

LET US LEARN YOGA CLASS 5 (ENGLISH)	107	88
PRANAYAM RAHASYA (JAPANEES)	180	76
RESEARCH PUBLICATIONS (ENGLISH)	500	576
SANT DARSHAN (ENGLISH)	200	541
SCIENCE STUDIES PRANAYAMA (ENGLISH)	125	106
SECRETS OF ASTAVARGA PLANTS (ENGLISH)	175	104
SECRETS OF INDIAN HERBS FOR GOOD HELATH	500	424
VITALITY STRENGTHENING ASTAVARGA PLANTS JEEVANIYA & VAYSTHAPAN PAUDHE	75	48
YOGA DARSHAN (THE YOGA PHILOSOPHY), (ENGLISH)	50	96
YOGA IN SYNERGY WITH MEDICAL SCIENCE (ENGLISH)	50	260
YOGA ITS PHILOSOPHY AND PRACTICE (ENGLISH)	157	166
YOGA ITS PHILOSOPHY AND PRACTICE (INTERNATIONAL ENGLISH)	400	140
YOGA SANDARSHIKA (ENGLISH)	50	96
YOGA- PLAY AND LEARN CLASS 1 & 2 (ENGLISH)	55	52